Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रप्रस्थ

उपेन्द्र कुमार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चर्चित कवि उपेंद्र कुमार की यह कृति महाभारत की अशेष सृजनात्मकता को प्रमाणित करती है। महाभारत में जीवन और सभ्यता की जटिलताओं को जिस संश्लिष्टता के साथ प्रस्तुत किया गया है, वह पूरे विश्व में अद्वितीय है। यही कारण है कि सभ्यता के इस नए चरण में, आधुनिक भारतीय रचनाकारों को सबसे अधिक प्रेरणा इसी महाग्रंथ से मिलती है। बल्कि, कुछ कवियों की तो एकाधिक कृतियाँ महाभारत कथा पर आधारित हैं। ज़ाहिरन, इन कृतियों के साथ ही नए समय संदर्भ से जोड़ कर महाभारत के किसी अंश की पुनर्रचना की चुनौती बढ़ती चली गई है। उपेंद्र कुमार ने बख़ूबी इस चुनौती को स्वीकार किया है और एक तरफ़ द्रौपती, कुंती और उर्वशी के माध्यम से स्त्री विमर्श को विस्तार दिया है तो दूसरी तरफ़ इंद्रप्रस्थ के सत्ता-संघर्ष की विडंबनाओं और उनके पीछे की क्रूरताओं को उजागर करके आज के सत्ता विमर्श को आगे बढ़ाया है। इस दृष्टि से, इसके महत्त्व का मूल्यांकन तो आनेवाला समय करेगा, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि लोक संवेदना और व्यंग्य विद्ध भाषा के लिए विशेष रूप से पहचाने जाने वाले इस कवि ने इंद्रप्रस्थ के माध्यम से अपनी सृतनात्मकता में एक नया आयाम जोड़ा है।

—मदन कश्यप

Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रप्रस्थ

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

G. M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 4945
27.12.2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रप्रस्थ

(काव्य)

उपेन्द्र कुमार

अंतिका प्रकाशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN 978-93-85013-49-2

इंद्रप्रस्थ

© उपेन्द्र कुमार

पहला संस्करण (सजिल्द) : 2016

मूल्य : 310.00 रुपए

प्रकाशक

अंतिका प्रकाशन

सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II

ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

फ़ोन : 0120-2648212, 0-9871856053

ई-मेल : antika56@gmail.com

वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : राजा रवि वर्मा

अंदर के सभी चित्र : पूनम किशोर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

INDRAPRASTH (Collection of Poem) by Upendra Kumar

Published by Antika Prakashan, C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II

Ghaziabad-201005 (UP) India

Price : ₹ 310.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

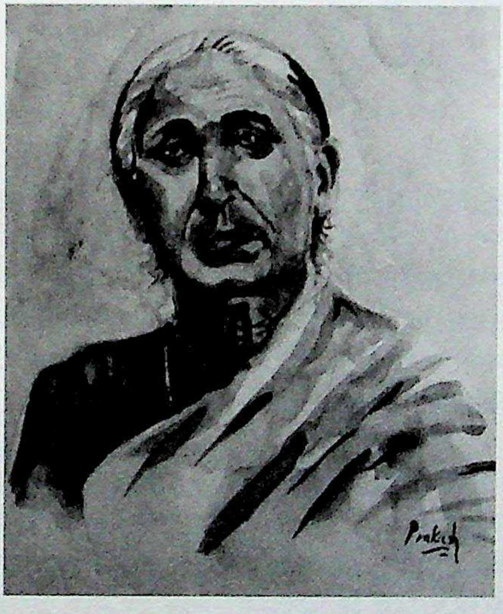

माँ को जिनसे सीखा दूसरों के दुःखों को समझना
और उनके प्रति संवेदनशील होना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

उपेंद्र कुमारजी का काव्य ग्रंथ 'इन्द्रप्रस्थ' पता नहीं किन स्वप्निल मुहूर्तों में रचा गया है। भारतीय साहित्य में 'रामायण' और 'महाभारत' की प्रेरणा समाप्त नहीं हुई। दूसरे शब्दों में सीता और द्रौपदी की कथा पता नहीं कितने कोणों से अनुभव कर लिखी जाती रही है। अभी-अभी 'सीता का सफर' और द्रौपदी की 'अंत:कथा' (अनिल कुमार पुरोहित) को पढ़ कर हृदयंगम कर ही रहा था कि फिर एक बार, 'इन्द्रप्रस्थ' के नाते द्रौपदी के सतीत्व की परिभाषा और पाँच पतियों का शुरू से अंत तक व्यवहार हृदय, मन, मस्तिष्क को मथ रहा है।

इसमें उपेंद्रजी पुरूरवा उर्वशी प्रसंग के माध्यम से प्रेम के जटिल रूपों पर प्रकाश डालते हैं। पर, वहाँ बार-बार द्रौपदी के अनुपम सौंदर्य के साथ जुड़े पाँच भिन्न भावों वाले पतियों के संग एक ज़िंदगी का निर्वाह कितना दुरूह होता है, यह चौंकाने वाला प्रसंग है। क्योंकि वह इससे पूर्व अपने रूप-सौंदर्य की अपूर्वता पर सचेतन हो चुकी होती है। संपूर्ण जीवन इस जटिलता को ढोती है। अंत में स्वार्गारोहण के समय हिमालय में गिर पड़ती है, कोई उसके प्रति स्नेह या सहानुभूति, दया, करुणा नहीं दिखाता। वह हिमालय की रेणुओं में मिल कर रेणु बनती जाती है। कभी वह बनी थी 'पांडवों के सहभोज की थाली' और आज सबके लिए तिरस्कृत जूठी पतल! जिसकी ओर देखना भी मना है। कवि कहते हैं, जब प्रेम हो तो मौन के संवाद में इतनी बातें संभव हैं कि फिर बोल कर कभी ऐसा अलौकिक संवाद नहीं हो पाता। इसी तरह कवि कल्पना करता है कि पाँचों ने द्रौपदी पर अधिकार को अपने-अपने ढंग उचित ठहराया है। उदाहरणार्थ युधिष्ठिर ने सोचा हो कि राज्य पर बड़े होने के नाते, मेरा अधिकार है तो फिर जीती हुई द्रौपदी पर क्यों न हो?.... इसी तरह सबके तर्क अंकित हैं। जब उससे एक मिल कर लौटता, दूसरे की पारी में द्रौपदी सोचती है—

"जब वो आएँगे तो मैं क्या कहूँगी?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्हें जितना स्नेह चाहिए
क्या मैं दे पाऊँगी?"

यहाँ द्रौपदी की स्वीकारोक्ति में वर्णन है नारी का टुकड़ों में बँटते व्यक्तित्व में उपजे द्वंद्व और असामर्थ का। यहाँ आकर सारा संकोच, सारी लाज, सारा असमंजस उसे यथार्थ के धरातल पर उतार जाता है। सारा कथन नारी मन की अदृश्य अलंघनीय रेखा के पास पारदर्शी हो उठता है। हालाँकि वह जीवन में कभी उफ् नहीं करती नारी!

उपेन्द्र ने कल्पना का सहारा लेकर कबूतर के हाथों संदेश भेज कर समाधान किया:

"तय हो गया कि दिन उनके हैं,
रात चाहे बारी बाले किसी भी पति की हो,
द्रौपदी के जीवन में बहार ही बहार थी।"

इस प्रकार उसने अर्जुन को पाने का गलियारा पा लिया था। यही है सृजनात्मक कल्पना। कवि ने कथानक और प्रसंग में इसी बिन्दु से अनूठापन भर दिया है। यह उम्र का, युग का और परिस्थिति का तकाजा था। इसमें न अनैतिकता है, न कोई नियभंग और न कोई नीति भंग। द्रौपदी का जीवन ऐसे काँटों से बार-बार गुज़रता गया।

यह है इंद्रप्रस्थ का चरित्र। वहाँ का वातावरण। इसमें नारी पुरुष के रिश्ते ही नहीं, उनके जीवन के ऊँचे-नीचे, बाँके-टेढ़े मोड़ों की कथा भी है। इस काव्य में 'एक था राजा एक थी रानी' वाली सीधी कथा नहीं और न ही प्रसाद (कामायनी) वाली जटिल महाकाव्यात्मक संकेत परक नई परंपरा। फिर भी इक्कीसवीं सदी के जीवन की छाया इन छंदों के पग-पग में लिपटी मिल जाती है।

उपेन्द्र कुमार के काव्य में संभावनाएँ झाँक रही हैं। इसमें भारतीय जीवन मूल्य जगह-जगह लहरा रहा है। इन्हीं में काव्य की सारी संभावनाएँ जीवन्यास पा जाती हैं।

अतः उन्हें जगन्नाथ का आशीष मिलेगा, इस विश्वास के साथ।

—शंकरलाल पुरोहित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो शब्द

उपेन्द्र कुमार की चौंका देने वाली काव्य-रचना 'इंद्रप्रस्थ' को जब मैंने पढ़ा तो इस कालजयी काव्य ने मुझे मजबूर किया और ख़्वाहिश भी हुई कि मैं इस नायाब क़िताब पर अपने ख़यालात का इजहार करूँ।

इसकी ख़ुसूसीयत, इसका क्लासिकी अंदाज़ और उससे हटकर उनकी ज़ुबान का बाँकपन मुझे निहायत ही ख़ूबसूरत लगा। इसमें कोई शक नहीं कि लीक से हटकर यह एक नया एप्रोच है और किस अंदाज़ से, किस ख़ूबी से एक हसीन दुनिया शायर ने रची है।

इसमें क्लासिकी की हर चीज़ है—कथा-लालित्य, सर्ग और हुनर। उपेन्द्र मुबारक़बाद के हक़दार हैं कि किस ख़ूबी से उन्होंने एक तिलस्मी दुनिया रची और उसे महाभारत की कथा से इस तरह जोड़ दिया कि पढ़ते-पढ़ते इन्सान खो जाता है।

हम सोचने लगते हैं कि क्या ये कहानी व्यास की है या उपेन्द्र की है?

कहानी तो व्यास की है मगर उससे हटकर उपेन्द्र एक रंगीन दुनिया तकलीख करते हैं। इंसान के दिलो-दिमाग़ को इस क़दर चौंकाते हैं कि पाठक का मन मुग्ध हो जाता है और वह उन्हीं के साथ चलने लगता है—

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

बादलों के आलिंगन में छुपा
बिजलियों की कौंध से
चमक चमक जाता
विस्मृत कथाओं और इतिहास के धुंधलके में
कुछ छुपा कुछ दीखता

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

समय के साथ दौड़ में
स्पर्धा करता
कभी उससे थोड़ा पीछे
तो कभी उससे थोड़ा आगे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काल को बाँटने वाली
द्वापर कलयुग की संधि की
भूल-भूलैया में चक्कर काटता
कभी इस तो कभी उस युग से बतियाता

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

समुद्र की झाग ओढ़ता हुआ
किरणों के रथ में लगाता छलांग
हवा के घोड़े बाँध
एक युग से दूसरे युग तक

मनुष्य का मन काँपने लगता है

इस तरह उपेन्द्र का जादू युगों के भूल भूलैयों से अर्थ ढूँढ़ता हुआ, अनर्थ के बीच से क्लासिकी को अत्यंत सरल बनाकर हमारे सामने रखता है। कविता की ऊपर दी गई लाइनों में इस बेबाक कविता का हुनर देखते ही बनता है। इसे जो भी पढ़ेगा, चकित रह जाएगा।

उपेन्द्र एक नई नज़र से क्लासिकी को रिइंटरप्रेट (Reinterpret) और रिवैल्यूऐट (Revaluate) कर रहे हैं। ऐसा करना इस सदी के लिए ज़रूरी भी है और महत्त्वपूर्ण भी।

हर युग में क्लासिकी को 'दिल में छुपे सत्य' जैसा, उस जमाने की नज़र से रिक्रिएट (Recreate) करना होता है। यही काम इस कद्दावर शायर ने हमें अता करके साहित्य में अपनी नई पहचान बनाई है। इसे समझदार और रसिक पाठक चाहें भी तो भुला नहीं पाएँगे।

मुझे इस महाकाव्य पर दो शब्द लिखते हुए बेइंतहा गर्व हो रहा है और मैं क़ुली क़ुतुबशाह की दक्किनी में लिखी लाइनें पेश कर रही हूँ—

'मेरा शहर तू लोगाँ सूँ मामूर कर
राखियाँ ज्यूँ त्यूँ तू दरिया में मीन या समी'

ये दुआ क़ुली की थी उसके शहर पर, मैं उसको ज़रा बढ़ाकर वही दुआ अब देहली के लिए माँगती हूँ जो शायद कभी इंद्रप्रस्थ था।

—राजकुमारी इंदिरा देवी धनराजगिरि

अर्थ : लोगाँ-लोग, मामूर-आबाद करना, ज्यूँ त्यूँ-जैसे तूने,
राखियाँ-रखना, मीन-मछली, या समी-या ईश्वर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं क्या कहूँ

महाभारत मुझे बचपन से ही आकर्षित करता रहा है। सबसे पहले तो इससे परिचय बच्चों की, उस समय की मशहूर पत्रिका 'चंदामामा' के द्वारा हुआ जिसमें सार-सक्षेप में महाभारत की पूरी कथा धारावाहिक रूप से छपी थी। इस बीच एक और उल्लेखनीय घटना हुई। मैं दसवीं कक्षा में था। भारती भवन प्रकाशन उस समय बिहार के सबसे प्रतिष्ठित पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन संस्थानों में से एक था। उसने लेख की एक अखिल विद्यालय प्रतियोगिता आयोजित की। मैंने भी अपना लेख भेजा। विषय तो अब याद नहीं रहा परंतु मेरे लेख को उस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मिला। इस घटना के अभी तक याद रहने का कारण वह विचित्र संयोग है कि पुरस्कार स्वरूप जो पुस्तक मुझे मिली वह श्री सी. राजगोपालाचारी द्वारा लिखित महाभारत का बहुत सुन्दर हिंदी अनुवाद था। खासी मोटी पुस्तक।

इसे एक बार पढ़ने के बाद भी मेरा मन नहीं भरा और अक्सर इसके इस-उस प्रसंग को मैं पढ़ता ही रहता। मेरे स्वर्गीय पिता जब मुझे 'महाभारत' में डूबा देखते उनके मुँह से अक्सर ये निकल ही जाता था, 'जब तुम गर्भ में थे तो तुम्हारी माँ ने पूरी महाभारत पढ़ डाली थी।'

महाभारत के प्रति मेरा रूझान कभी कम नहीं हुआ। प्रौढ़ अवस्था तक आते-आते अनेक विद्वानों द्वारा लिखित महाभारत या इससे संबंधित काफ़ी पुस्तकें पढ़ीं। मेरे सोच में यह कथा सदा विद्यमान रही। शायद यही कारण है कि मेरी अनेक कविताओं में महाभारत के विभिन्न चरित्र भिन्न-भिन्न संदर्भों में आते रहे हैं। कभी अपने पारंपरिक मिथकीय रूपों में तो कभी नए अर्थ संवाहक प्रतीकों का रूप धर। परंतु वर्तमान रचना 'इंद्रप्रस्थ' इस सबसे अलग है।

पता नहीं वह कौन-सी प्रेरणा थी, कौन-सी अनुभूति थी या कौन-सी रचनात्मक-सृजन-शक्ति थी जो प्राणों से उपज अपनी पुलक से मुझे सहलाती, अभिभूत करती, वशीभूत करती, अपना अनुशासन मुझ पर लागू कर देती। मैं इस प्रभाव से न अपने को मुक्त कर सकता था, न मुक्त करना चाहता था। किसी पराशक्ति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से आविष्ट व्यक्ति-सा मैं, बैठ जाता था लिखने। आत्मविस्मृति के उन क्षणों में, मेरा सोच, मेरी इंद्रियाँ, कुछ भी तो नहीं रह जाता था मेरे वश में सिवाय उस भाव-समाधि के दौरान मष्तिस्क में आते विचारों को सामने पड़े काग़ज़ पर उतारने के। फिर धीरे-धीरे यह समाधि, यह अंतर्लीनता दूर होने लगती जैसे कोई धुंध हट रही हो। मेरी कलम भी धीरे-धीरे रुक जाती। कुछ तय नहीं था कब यह भाव-समाधि लग जाए, कितनी देर लगी रहे, कब टूट जाए। कभी अल्प प्रतीत होती तो कभी अनन्त।

इन समाधियों के बीच के समय में भी यह रचना दिमाग़ में घूमती रहती। संबंधित मिथकीय पात्र अपनी-अपनी कथाओं के साथ टहलते रहते। इन कथाओं को, मेरी सामान्य बुद्धि जाँचती-परखती रहती, कथाओं के विभिन्न पहलुओं को समझने का, उनमें छिपे संदेशों प्रतीकों को जानने के प्रयास में लगी रहती। कभी बुद्धि, जो जैसे दिखाई पड़ते उन्हें उसी स्वरूप में स्वीकार करती, कभी नहीं तो कभी इन कथाओं के बीच छिपे रिक्त स्थानों के बीच से झाँकती-छिपती कुछ विचित्र और नई कहानियों को खोज खींचकर बाहर लाती।

मुझे पता नहीं होता कि यह सारा चिंतन काग़ज़ पर उतरेगा या नहीं। बात बनेगी या नहीं। या फिर कौन सी बात कैसा रूप धर प्रगट होगी। फिर भी उस समाधि की सी अवस्था के दौरान, यह चिंतन, ये विचार मस्तिष्क में उपस्थित तो रहते ही और उचित अवसर पर, उचित रूप में, काग़ज़ पर, उतरते भी रहते।

इस 'इंद्रप्रस्थ' नामक रचना में एक शाश्वत पुरुष है जो कभी युधिष्ठिर बन बोलता है तो कभी अर्जुन। कभी उसके मुख से कृष्ण की आवाज़ में आज की राजनीति प्रगट होती है तो कभी आज के वंचित शोषित समाज के दुःख दर्द की गाथा कर्ण की व्यथा बन व्यक्त हो रही होती है।

एक शाश्वत स्त्री भी है जिसकी आवाज़ में कभी कुंती के दुखों का तो कभी द्रौपदी के विमर्श का आभास मिलता है तो कभी आज की निर्भया या बलात्कार के कारण माँ बनी किसी कुमारी का।

कथा भी कोई नहीं है। उसके सूत्र भिन्न-भिन्न स्थानों से उठाए जाते और विभिन्न स्थानों पर प्रगट होते रहते हैं। व्याकरण भी अस्त-व्यस्त। अन्य पुरुष में बखानी जाती कथा अचानक प्रथम पुरुष में अभिव्यक्त होने लगती है। यानी भयंकर अव्यवस्था। सुधी और सुहृदय पाठक ही कोई व्यवस्था खोज पाएँ तो खोज पाएँ। मेरे वश का तो है नहीं। जितना और जैसा मैं रच सकता था, अपनी सीमित सामर्थ्य के अनुरूप, वह अपने सर्वोत्तम रूप में आपके सामने प्रस्तुत है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'इंद्रप्रस्थ' की रचना के दौरान मित्रों, सहयोगियों और शुभचिंतकों का साथ, त्वरित सहयोग और हौसला-अफजाई सदा प्राप्त होती रही और उसके लिए मैं उन सबका कृतज्ञ हूँ। विशेष रूप से डॉ. शंकर लाल पुरोहित का उनके अति महत्त्वपूर्ण मार्ग निर्देशों के लिए एवं आदरणीया राजकुमारी इंदिरा धनराजगीरि का उनके प्रेरणादायक सहयोग के लिए, जो इस पुस्तक के निर्माण के बीहड़ रास्तों में पाथेय बन साथ रहा।

कंप्यूटर विशेषज्ञ श्री मनोज कुमार के लिए भी धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा जिन्होंने उत्साह और लगन के साथ इस पुस्तक को तैयार करने, विभिन्न संदर्भों को खोजने तथा आवश्यक अध्ययन सामग्री एकत्र करने में बहुत परिश्रम किया और मेरे साथ आरंभ से अंत तक लगे रहे। इस पुस्तक की साज-सज्जा और भव्य प्रस्तुतीकरण का सारा श्रेय प्रकाशक श्री गौरीनाथ को जाता है।

जैसी भी बन पाई है, अब पुस्तक आपके हाथों में है। अन्तिम निर्णय पाठकों का ही होता है। अत: मेरा अनुरोध है कि अपने हृदय को कुछ तरल भावों से, कुछ साहित्य रस से भरने दें फिर निश्चिंत मन से इसे आद्योपांत पढ़ें। एक कवि को सबसे ज़्यादा आवश्यकता होती है सुधी और सुहृदय पाठकों की।

—उपेन्द्र कुमार

एफ-73, ईस्ट ऑफ कैलाश
नई दिल्ली-110065
मोबाइल-9818934640

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

भूमिका	7
दो शब्द	9
मैं क्या कहूँ	11
शायद यही इंद्रप्रस्थ है	17
याज्ञसेनी	27
स्वयंवर	31
आवश्यक है इंद्रप्रस्थ	35
चुंबन ही चुंबन	43
जब तक जीवन है	55
माँ जानती थी	63
मोर नाचते हैं	75
लहरों में खड़ी	83
कुल और गोत्र	99
देखे मैंने उन आँखों से	107
प्रत्येक स्त्री का इंद्रप्रस्थ	121

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से आविष्ट व्यक्ति-सा मैं, बैठ जाता था लिखने। आत्मविस्मृति के उन क्षणों में, मेरा सोच, मेरी इंद्रियाँ, कुछ भी तो नहीं रह जाता था मेरे वश में सिवाय उस भाव-समाधि के दौरान मष्तिस्क में आते विचारों को सामने पड़े काग़ज़ पर उतारने के। फिर धीरे-धीरे यह समाधि, यह अंतर्लीनता दूर होने लगती जैसे कोई धुंध हट रही हो। मेरी कलम भी धीरे-धीरे रुक जाती। कुछ तय नहीं था कब यह भाव-समाधि लग जाए, कितनी देर लगी रहे, कब टूट जाए। कभी अल्प प्रतीत होती तो कभी अनन्त।

इन समाधियों के बीच के समय में भी यह रचना दिमाग़ में घूमती रहती। संबंधित मिथकीय पात्र अपनी-अपनी कथाओं के साथ टहलते रहते। इन कथाओं को, मेरी सामान्य बुद्धि जाँचती-परखती रहती, कथाओं के विभिन्न पहलुओं को समझने का, उनमें छिपे संदेशों प्रतीकों को जानने के प्रयास में लगी रहती। कभी बुद्धि, जो जैसे दिखाई पड़ते उन्हें उसी स्वरूप में स्वीकार करती, कभी नहीं तो कभी इन कथाओं के बीच छिपे रिक्त स्थानों के बीच से झाँकती-छिपती कुछ विचित्र और नई कहानियों को खोज खींचकर बाहर लाती।

मुझे पता नहीं होता कि यह सारा चिंतन काग़ज़ पर उतरेगा या नहीं। बात बनेगी या नहीं। या फिर कौन सी बात कैसा रूप धर प्रगट होगी। फिर भी उस समाधि की सी अवस्था के दौरान, यह चिंतन, ये विचार मस्तिष्क में उपस्थित तो रहते ही और उचित अवसर पर, उचित रूप में, काग़ज़ पर, उतरते भी रहते।

इस 'इंद्रप्रस्थ' नामक रचना में एक शाश्वत पुरुष है जो कभी युधिष्ठिर बन बोलता है तो कभी अर्जुन। कभी उसके मुख से कृष्ण की आवाज़ में आज की राजनीति प्रगट होती है तो कभी आज के वंचित शोषित समाज के दु:ख दर्द की गाथा कर्ण की व्यथा बन व्यक्त हो रही होती है।

एक शाश्वत स्त्री भी है जिसकी आवाज़ में कभी कुंती के दुखों का तो कभी द्रौपदी के विमर्श का आभास मिलता है तो कभी आज की निर्भया या बलात्कार के कारण माँ बनी किसी कुमारी का।

कथा भी कोई नहीं है। उसके सूत्र भिन्न-भिन्न स्थानों से उठाए जाते और विभिन्न स्थानों पर प्रगट होते रहते हैं। व्याकरण भी अस्त-व्यस्त। अन्य पुरुष में बखानी जाती कथा अचानक प्रथम पुरुष में अभिव्यक्त होने लगती है। यानी भयंकर अव्यवस्था। सुधी और सुहृदय पाठक ही कोई व्यवस्था खोज पाएँ तो खोज पाएँ। मेरे वश का तो है नहीं। जितना और जैसा मैं रच सकता था, अपनी सीमित सामर्थ्य के अनुरूप, वह अपने सर्वोत्तम रूप में आपके सामने प्रस्तुत है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'इंद्रप्रस्थ' की रचना के दौरान मित्रों, सहयोगियों और शुभचिंतकों का साथ, त्वरित सहयोग और हौसला-अफजाई सदा प्राप्त होती रही और उसके लिए मैं उन सबका कृतज्ञ हूँ। विशेष रूप से डॉ. शंकर लाल पुरोहित का उनके अति महत्त्वपूर्ण मार्ग निर्देशों के लिए एवं आदरणीया राजकुमारी इंदिरा धनराजगीरि का उनके प्रेरणादायक सहयोग के लिए, जो इस पुस्तक के निर्माण के बीहड़ रास्तों में पाथेय बन साथ रहा।

कंप्यूटर विशेषज्ञ श्री मनोज कुमार के लिए भी धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा जिन्होंने उत्साह और लगन के साथ इस पुस्तक को तैयार करने, विभिन्न संदर्भों को खोजने तथा आवश्यक अध्ययन सामग्री एकत्र करने में बहुत परिश्रम किया और मेरे साथ आरंभ से अंत तक लगे रहे। इस पुस्तक की साज-सज्जा और भव्य प्रस्तुतीकरण का सारा श्रेय प्रकाशक श्री गौरीनाथ को जाता है।

जैसी भी बन पाई है, अब पुस्तक आपके हाथों में है। अन्तिम निर्णय पाठकों का ही होता है। अत: मेरा अनुरोध है कि अपने हृदय को कुछ तरल भावों से, कुछ साहित्य रस से भरने दें फिर निश्चिंत मन से इसे आद्योपांत पढ़ें। एक कवि को सबसे ज़्यादा आवश्यकता होती है सुधी और सुहृदय पाठकों की।

—उपेन्द्र कुमार

एफ-73, ईस्ट ऑफ कैलाश
नई दिल्ली-110065
मोबाइल-9818934640

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

भूमिका	7
दो शब्द	9
मैं क्या कहूँ	11
शायद यही इंद्रप्रस्थ है	17
याज्ञसेनी	27
स्वयंवर	31
आवश्यक है इंद्रप्रस्थ	35
चुंबन ही चुंबन	43
जब तक जीवन है	55
माँ जानती थी	63
मोर नाचते हैं	75
लहरों में खड़ी	83
कुल और गोत्र	99
देखे मैंने उन आँखों से	107
प्रत्येक स्त्री का इंद्रप्रस्थ	121

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

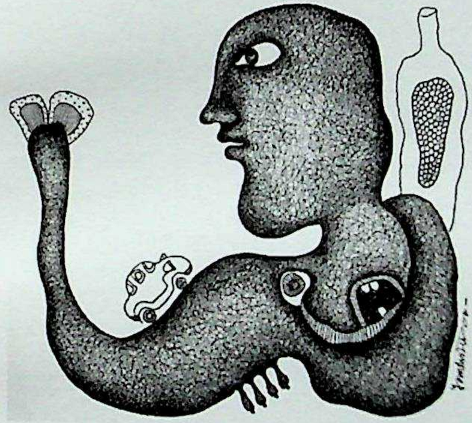

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

धरती के उरोजों पर सोता आलिंगनबद्ध
अंगड़ाई से उसको जगाता उलझन सुलझाता मन को बादल
माँगता जीवन के उत्तर
सामने जो बैठा है उससे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शायद यही इंद्रप्रस्थ है
बादलों के आलिंगन में छुपा
बिजलियों की कौंध से चमक चमक जाता
विस्मृत कथाओं और इतिहास के धुंधलके में कुछ छुपा, कुछ दीखता

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

समय के साथ दौड़ में स्पर्धा करता
कभी उससे थोड़ा पीछे तो कभी उससे थोड़ा आगे
काल को बाँटने वाली
द्वापर कलयुग की संधि की भूल-भूलैया में चक्कर काटता
कभी इस तो कभी उस युग से बतियाता

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

समुद्र की झाग ओढ़ता हुआ
किरणों के रथ में लगाता छलांग हवा के घोड़े बाँध
एक युग से दूसरे युग तक

मन काँपने लगता मानव मन ललचाता
परियों के जीवन में समा जाता
और इंद्रप्रस्थ पीढ़ी दर पीढ़ी प्रकृति और पुरुष का सुन्दर मिलन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन में है जीवन में है
रुधिर के उफान से लेकर देह की सिहरन में है

अगर इतनी मिठास है इंद्रप्रस्थ में
तो फिर स्वर्ग क्या है
इंद्र का दरबार नाचती अप्सराएँ
प्रेम तो धरती का उपहार है
परंतु मनुष्य है उस देवलोक से चमत्कृत
जो बादलों में ऐसे छुपा है
जहाँ प्रेमियों की आँखें पहुँच नहीं पातीं

दिल में छिपे सत्य जैसा वह न तो छूटता न आता है पकड़ में
उसके इंतज़ार में मुड़-मुड़कर देखते हैं
उसकी पदचाप की उम्मीद में मुड़-मुड़कर सुनते हैं

सरपट दौड़ता
धूल और धुंध भरी आँधियों में डूबता तैरता
वेग में अपने जाने कितना अमूल्य कितना कूड़ा ढोता हाँफता भागता

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

धरती के उरोजों पर सोता आलिंगनबद्ध
अंगड़ाई से उसको जगाता उलझन सुलझाता मन को नापता
माँगता जीवन के उत्तर
सामने जो बैठा है उससे

उसे भी तो मालूम नहीं
दोनों केवल एक ही सत्य के राही हैं
जो है कल्पना से परे यथार्थ से दूर
तक़रीबन इंद्रप्रस्थ-सा ही दीखता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

प्रार्थना के सुर में प्रशंसा के गीत गाता
ख़ुद के दरबार में ख़ुद को ही बार-बार हाजरी बजाता

आइए इंद्र आइए
उर्वशी को लाइए
जीवन के क्षणों को चमकाइए
स्वर्ण बनाइए

क्या इंद्र के आने से हम ये सब हो जाएँगे?

हाँ हो जाएँगे,
हमारे तन में कल्पवृक्ष भी तो है

इसके घने जंगलों में कल्पवृक्ष भी तो है

अच्छा कल्पवृक्ष?

हाँ-हाँ, देखिए
कुछ दूर चलकर देखिए
कोई रात सोकर देखिए
बाँहें फैलाकर देखिए
आँखों में आँखें डालकर देखिए
खिलने दीजिए इच्छाओं के फूल
प्रेम-प्रसंगों को जीने दीजिए

तब,
तभी तो वह इंद्रप्रस्थ है
न रास्ते से दूर न उसकी पहुँच में
किन रथों में पहुँचे प्रेम नदियों पर चलते हुए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वक़्त की ललकार को अनसुना करते

मन में जगह कहाँ किसी महाभारत की
वो तो मिलन है पूर्व निर्धारित
कंपन में समाहित
वो लय है
वो ज्योति है
इंद्रप्रस्थ के रास्ते अनोखे
कल्पवृक्ष की देन अनोखी

कोई न आए मेरे पीछे
जब कल्पवृक्ष के आलिंगन में, मैं कल्पवृक्ष हो जाता हूँ
किसी का लोभी मन कहीं मुझे न चुरा ले
मुझसे माँग ले मेरा यौवन जीवन
ज़्युज़ तेरे सिवा मैं कुछ भी दे सकता हूँ

प्रेम किस तरह दूँ
मैंने तो प्रेम किया है
वो कुछ भी माँग सकती है
उसी का तो है सबकुछ
मेरे ही भीतर तो है वो
कल्पवृक्ष को हटा भी सकती है
अगर जगह न हो जीवन में

कल रात जो आलिंगन लिप्त हो सोया
करवट बदली तो खुल गई नींद
परंतु देखा कई युग बदल चुके थे
कितने सौर-मंडल ढल चुके थे

अरे, प्रेयसी का क्या हुआ
हम सौ बार जन्म लेते हैं और सौ बार इसी को जीते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या यह एक स्थिति है
या सत्य
अब कुरुक्षेत्र से ही होगा हल

क्या उसके जीवन में
पुरुष की कहानी है
अन्याय की कहानी है

पाँच पतियों के सुपूर्द किया उसे युग ने
केवल इतना ही नहीं
उसने तो प्रेम किया केवल अर्जुन से
और लुट गई उसी के हाथ
अन्य विवाहों से कुचल डाला द्रोपदी का मन
पुरुषों ने उसे लज्जित किया भरे समाज में

पुरुष प्रधान समाज
युगों-युगों से अपरिवर्तित चला आ रहा है आजतक
कुंती, द्रौपदी, अर्जुन, कर्ण रोते ही रहे

सामने छिड़ा रहा कुरुक्षेत्र
अर्जुन, कर्ण ने शस्त्र उठाए
सारथी कृष्ण ने कर दिया उन्हें एक-दूसरे के सामने

एकमात्र गवाह है संजय
गीता से लेकर संपूर्ण कुरुक्षेत्र का
सहमत कौन है इससे?
क्या पक्षधर होता है कोई इतने बड़े अन्याय का

हमारी सदियों ने देखा नहीं कुरुक्षेत्र
पर उसके घाव बाक़ी हैं
और सहमत कोई नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीच की सदियों ने तो कुचल डाला इतिहास को
प्रेम के प्रत्येक रूप को छोड़ दिया तने-तन्हा गूँजती चीख़ों में

आइए इंद्र आइए
प्रेम का उपहार पाइए
देखिए धरती का प्रेम
आँखों में आँखें डालिए
आपके स्वर्ग से इंद्रप्रस्थ ही अच्छा है

यहाँ तो सबकुछ है
हरियाली है नशा है
हाँ, आपको शायद उर्वशी को यहाँ लाना है
संयोग और मिलन की वास्तविकता इंद्रप्रस्थ ही दे सकता है

इंद्र, ये जानकर ही तो आए आप
वरना आनंद स्वर्ग का छोड़ आते क्यों छिपकर धरती पर
हमसे सीखने जो आपने खोया है

जानिए, इंद्र
प्यार पृथ्वी का उपहार है
आपके आकाश में धूप की ऊर्जा कहाँ
आलिंगन है पर त्याग कहाँ
आदत है आपको कई नर्तकियों की
हम पृथ्वी पर चाहते हैं एक को
भूलकर अनेक को

पुरूरवा ने उर्वशी से प्रेम किया
उसको क्या नहीं दिया
आलिंगन में गढ़ता रहा विश्वास
कि वो नहीं जा पाएगी रहेगी सदा मेरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर कहाँ इंद्र
आप ही ने तो दिया श्राप
और एक ही झटके में प्रेम को त्याग
चली गई उर्वशी आपके पास
इंद्रलोक भले घर है उसका
तन-बदन तो मेरा था

उर्वशी को धरती पर लाएँगे अपने साथ
वो फिर मुझे चाहे या न चाहे
किसी और को चाहेगी तो मुश्किल होगी

साहस हो तो लाना
वरना वह मुझे ढूँढती आएगी
मेरे पौरुष ने उसे पूर्ण स्त्री बनाया
आलिंगन ही आलिंगन चुंबन ही चुंबन
हम दोनों का लौकिक सौंदर्य तुम क्या जानो
तुम तो कभी एक के नहीं रहे

इंद्र के दरबार में तो हैं कई अप्सराएँ
आपके इर्द-गिर्द नाचती, गाती, रिझाती

मेरे पास तो एक ही उर्वशी थी
अब भी है
प्रेम कभी समाप्त नहीं होता
वो पुनः पुनः होता है अवतरित मेरे साथ प्रत्येक पुनर्जन्म में
कहाँ है किसी के पास कोई उत्तर
समाधान तो नहीं कर सकता कोई
जिस पर गुज़रती है वो प्रेमी मनुष्य ही हो सकता है
इंद्र नहीं

उर्वशी को लेकर इंद्र पृथ्वी पर आते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पौधे, पेड़, समुद्र करते उनका स्वागत
खेत-खलिहान करते उनका स्वागत
परंतु फिर से उर्वशी की आँखें
पुरूरवा को तलाशती हैं
इधर-उधर देखती हैं
आख़िर उसका प्रेमी इस धरती का ही तो उपहार था
उसके मन का साथी था
संभव होता तो वह उसे ही बार-बार माला पहनाती
मन ही मन कहती है वो मनमीत कहाँ है

वक़्त कितना भोला है
समझ नहीं पाता कि हम
कल्पवृक्ष तक पहुँचें कैसे?
इंद्रप्रस्थ के रास्ते अनोखे

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

लोक से उपजे
असंख्य रोचक प्रसंग
रहा जिन्हें इनकार लिपिबद्धता से
परंतु मनचाहे ढंग से फलांग इतिहास
जातीय पहचान के प्रतीक बने
अनेकानेक मिथकों की थाती अपने ख़ज़ाने में सँजोए
यदि यह हस्तिनापुर नहीं है तो फिर क्यों न हो यह इंद्रप्रस्थ

शायद यही इंद्रप्रस्थ है

मगर हमें वहीं जाना है
जहाँ से कोई पुकारता
जहाँ से कोई बुलाता है
न जाने क्यूँ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

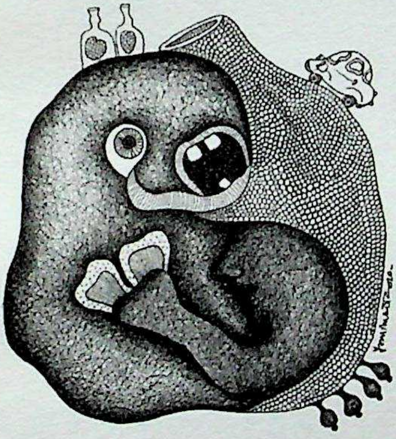

याज्ञसेनी

लो फिर उठी यज्ञवेदी से ऊपर
एक नारी मूर्ति याज्ञसेनी
नील पद्मकांत मणि सी अतीव सुंदरी
दीर्घ देह, उन्नत पुष्ट उरोज, पतली कमर
कदली स्तंभ सी चिकनी सुगठित जंघाएँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरे, अरे देखिए जल रही है यज्ञ की अग्नि
यज्ञ
आर्यावर्त की एक विलक्षण परम्परा
मेरुदंड मिथकीय कथाओं का
जो सार्थक था सतयुग से द्वापर तक
परंतु निरर्थक कलयुग में
कथाओं से बाहर
सिवाय कभी-कभी थोड़ी झूठी सांत्वना प्रदान करने के
धर्मभीरू जनता को

यज्ञ करवा रहे हैं पांचाल नरेश द्रुपद
गुरु हैं उपयाज एवं याज ऋषि
कठिन है जानना
इस द्रोणांतक यज्ञ में यज्ञकुंड से
उठती हुई लपटें होमाग्नि हैं
अथवा द्रुपद के हृदय में उठती
अपमान के प्रतिशोध की ज्वाला

तेज़ और तेज़ होती लपटें
तेज़ और तेज़ होता मंत्रोच्चार
प्रगट हो रहा एक तेजोवंत पुत्र धृष्टद्युम्न
जन्म से ही तेजस्वी गुणों से परिपूर्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लो फिर उठी यज्ञवेदी से ऊपर
एक नारी मूर्ति याज्ञसेनी
नील पद्मकांत मणि सी अतीव सुंदरी
दीर्घ देह, उन्नत पुष्ट उरोज, पतली कमर
कदली स्तंभ सी चिकनी सुगठित जंघाएँ
बुद्धि से चमकती बड़ी-बड़ी हिरनी सी मोहक चंचल काली आँखें
जैसे विश्वकर्मा के हाथों बनी प्रतिमा
अतीव सुंदर मुखमंडल विलक्षण अंग सौंदर्य
उमड़ती घनी बदली-सी केशराशि
जिनमें हवा भी क़ैद हो जाती है पल दो पल
देह में कमल पुष्प की भीनी-भीनी गंध
ऐसी कि, भौरें भी खा जाएँ धोखा

इस रूप राशि के समक्ष
यज्ञाग्नि की शिखा हो गई निष्कंप
काल भी एक क्षण के लिए स्थिर
धीर गंभीर स्वरों में गूँजती घोषणा
द्रुपद की मनोकामना की पूर्ण पूर्ति का आश्वासन देती आकाशवाणी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वयंवर

जहाँ द्रौपदी वहीं इंद्रप्रस्थ
इंद्रप्रस्थ का आरंभ द्रौपदी
इंद्रप्रस्थ का अंत द्रौपदी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काल के विरुद्ध
दौड़ रहा कल्पना के पंख लगा
उड़ता जा रहा वेगवान अश्व

गति का विभ्रम
आगे या पीछे भविष्य अथवा अतीत
या बीता समय एक बार फिर लौट रहा।

आह, गति विभ्रम के साथ आ जुटा दिशा भ्रम भी
यहाँ कहाँ इंद्रप्रस्थ
यह तो पांचाल देश है द्रुपद की राजधानी
सजी है अपूर्व स्वयंवर सभा
एकत्रित सारे नामी वीर योद्धा
महाबली, महाप्रतापी राजा
रूप में, गुण में, कुल में एक से बढ़कर एक

किसी के लिए कृष्णा
किसी के लिए याज्ञसेनी
किसी के लिए पांचाली
तो किसी के लिए द्रौपदी

द्रुपद राजकुमारी खड़ी है हाथ में लिए वरमाला
बगल में खड़े भाई धृष्टद्युम्न

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या वह मुझे पहचान पाएगी
क्या कोई और भी मुझ जैसा होगा

नहीं नहीं हाथी नहीं
घोड़ा लेकर जाऊँगा
राजकुमारी को संग लिए
द्वापर से कलयुग में लगाऊँगा छलांग

जहाँ द्रौपदी वहीं इंद्रप्रस्थ
इंद्रप्रस्थ का आरंभ द्रौपदी
इंद्रप्रस्थ का अंत द्रौपदी

समय को सेज बना प्रेयसी के संग
कल्पवृक्ष के झुरमुट में
सो जाऊँगा आलिंगनबद्ध हो

आनंद ही आनंद
सोना बन जाऊँगा

कल्पवृक्ष से जो माँगे, मिलता है
मैं मनुष्य हूँ
क्या चाहूँ सिवा प्रेम के?
क्या माँगू?
समय से डर भी लगता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

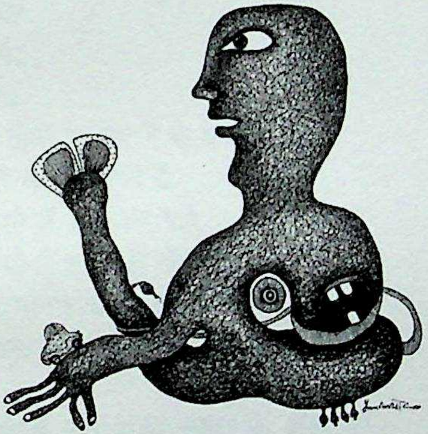

आवश्यक है इंद्रप्रस्थ

विधि का यह कैसा विधान है,
कैसा यह संयोग
अथवा षड्यंत्र समय का
स्त्री पीड़क, क्रूर, पाखंडी
पितृसत्तात्मक मानसिकता से ग्रस्त
कामांध नृपों की वही कहानी
इंद्रप्रस्थ में दुहराई गई बार-बार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संयोग
आनंद
समय
इन तीनों के मिलने से बनते हैं वर्ष
वर्षों से युग बनते हैं
किसी में हम चल पाते
किसी में हम नहीं होते
हम माँगना चाहेंगे कल्पवृक्ष से
अनन्त काल तक जीवन

अमरत्व और अनंत जीवन के अंतर को
जानता है केवल इंद्रप्रस्थ
आवश्यक है इंद्रप्रस्थ
आवश्यक है उसे पा लेना
कल्पवृक्ष से पहले

और क्या-क्या जानता है इंद्रप्रस्थ
वह तो पता चलेगा उसके मिलने पर
रहस्यों को जानने की प्रबल इच्छा के प्रकाश में
जो कुछ झिलमिलाता है वही है इंद्रप्रस्थ

उसे ही तो खोजना है जो मिलकर नहीं मिलता
और नहीं मिलने पर भी सदा रहता हमारे साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक साये की तरह क़दम-ब-क़दम
क्या खोजता है?

जन्म और मृत्यु के रहस्य?
लोक और परलोक की बातें?
जन्म से पहले कहाँ थे
मृत्यु के बाद कहाँ होंगे
जीवन का अर्थ क्या है?

पूर्ण अज्ञान से पूर्ण ज्ञान तक
एक सेतु बनाता है इंद्रप्रस्थ

मिलने पर भी क्यों देगा इंद्रप्रस्थ
जो सबकुछ है उसके पास
कौन करता है अपनी तिजोरी पूरी तरह ख़ाली
मात्र सतह पर तैरने से तो समुद्र नहीं दे देता मोती
विभक्त हो नहीं दे देता मार्ग

अपने पौरुष को खींच ले जाना पड़ता है
उस असंभव ऊँचाई तक
जहाँ पहुँचते ही थर्रा उठती है पृथ्वी
हाहाकार कर उठती है प्रकृति
तोड़ देते हैं सारी सीमाएँ सारे बंधन जल, वायु और अग्नि

किसे मालूम क्या देगा
और क्यों देगा इंद्रप्रस्थ
अपना कुछ भी
क्या होंगी उसकी शर्तें?
देखा जाएगा पहले मिले तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होगा तो कहीं न कहीं
परंतु कहाँ
भूत में या यहीं कहीं वर्तमान में
या दूर भविष्य में

जिसे जैसा भी पाते हैं
उसे चमकाते हैं सुधारते हैं
नई ऊँचाइयों तक ले जाते हैं
अपने वर्तमान को करते हैं तैयार बेहतर भविष्य के लिए
क्या इंद्रप्रस्थ भी हो गया होगा बेहतर?
देखते हैं

पांडव तो थे निश्चय ही थोड़ा बेहतर कौरवों से
ऐसा बताते हैं महर्षि वेदव्यास
माननी ही पड़ेगी उनकी बात
बावजूद इसके कि
विजयी पक्ष के शासनकाल में ही
शायद रचित हुआ होगा महाभारत
वरना कौन पिता रखेगा अपने नौनिहालों का नाम
दुर्योधन और दुशासन
फिर क्या महाभारतकार ने बदल दिए नाम
सुयोधन और सुशासन के
इतना पूर्वाग्रह!

धृष्टराष्ट्र
जिसे नहीं दीखता था वह सब कुछ
जो दीखता है नेत्रधारियों को
परंतु शायद सुन लेता था वह समय की पगचाप

उसी ने दिया पांडवों को यह अंधा न्याय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया बँटवारा दो भागों में राज्य का
इंद्रप्रस्थ पांडवों को
हस्तिनापुर कौरवों को

इंद्रप्रस्थ का राज देते समय दिए मात्र दो सूत्र
पहला एक स्थान का नाम खांडवप्रस्थ
दूसरा तीन पूर्वजों के नाम
पुरूरवा, नहुष और ययाति

उन्हीं संकेत सूत्रों के सहारे पहुँचे पांडव इंद्रप्रस्थ
बनाया उसे राजधानी फैलाया राज-पाट

हमारे पास भी तो
इंद्रप्रस्थ तक पहुँचने के लिए उपलब्ध हैं यही कुछ
एक स्थान और तीन पूर्वजों के नाम

खांडव वन तो जला डाला था पांडवों ने
बाक़ी बचे तीन संदर्भ
पुरूरवा, नहुष और ययाति

उड़ो मेरे घोड़े कल्पना के पंख पसार
कलयुग से द्वापर
द्वापर से त्रेता
त्रेता से सतयुग तक

दौड़ निकलो विपरीत गति से
कराल काल के कपाल को कँपाते
छान डालो सबकुछ
विध्वंस की सीमा तक पहुँचो

कैसा विचित्र संयोग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरूरवा, नहुष, ययाति
जैसे महाप्रतापी परंतु कामांध
नृपों की कहानी
बार-बार दुहराता रहा इंद्रप्रस्थ

जहाँ किया गया स्त्री मर्यादा का बार-बार अपहरण
उसकी इच्छाओं
उसके अधिकारों
उसकी स्वायत्तता का
किया गया बार-बार दमन
कामना-वासना की परितृप्ति के खेल में
जितना किया सुधा-पान उतनी बढ़ी प्यास
अतृप्ति ही अतृप्ति
और... और... और...
यह अतृप्ति का दौर।

महाराज पुरूरवा ने पुत्र प्राप्ति हेतु
महारानी औशीनरी को
महल में रह कर यज्ञ करने के लिए छोड़ दिया
और स्वयं निकल गए जंगलों में

वर्षों-वर्षों तक रहे कामसुख भोगते
अप्सरा उर्वशी के संग
भूलकर पत्नी के प्रति प्रेम और कर्तव्य को

औशीनरी का नारी मन तड़पता रहा पति के संग को
उसके प्यार को

दग्ध पति के छलपूर्ण व्यवहार से
सौतन की उपस्थिति के दाह को झेलती
सोचती ही रही औशीनरी
यज्ञ करे वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और पति यत्न करे पुत्र प्राप्ति का अप्सरा उर्वशी के संग

नहुष तो कामांधता में रहे पुरूरवा से भी आगे
पति की अनुपस्थिति में
पतिव्रता शची को दिए कष्ट इतने
कि स्वर्ग छोड़ जाना पड़ा उसे
ब्रह्मा की शरण में

ययाति इन दोनों से भी निकले आगे
अतृप्त कामवासना के मारे
बदल ली अपनी वृद्धावस्था पुत्र के यौवन से
शारीरिक सुख भोगते रहे सैकड़ों वर्ष
फिर भी न मिटी प्यास

विधि का यह कैसा विधान है
कैसा यह संयोग
अथवा षड्यंत्र समय का
स्त्री पीड़क, क्रूर, पाखंडी
पितृसत्तात्मक मानसिकता से ग्रस्त
कामांध नृपों की वही कहानी
इंद्रप्रस्थ में दुहराई गई बार-बार

झेला रानियों, महारानियों, देवियों ने
हर बार वही संताप दुख और अवमानना
छली, स्वार्थी, प्रपंची पुरुषों के हाथ

जितना कुरूप उतना ही सत्य
इंद्रप्रस्थ के इतिहास में
जाने कैसे
कामवासनाओं की आसक्ति ही रही
प्रेरक शक्ति सारी महत्त्वपूर्ण घटनाओं की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

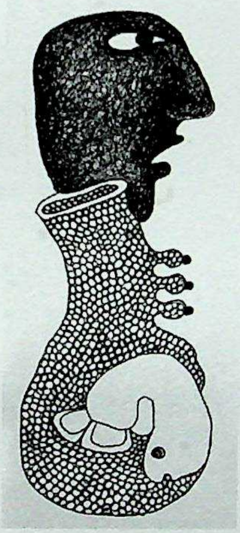

चुंबन ही चुंबन

एक दूसरे को प्यार की अमृतधारा से नहलाते
अंगों में कौंधती विद्युत तरंगों से
उद्वेलित कामनाएँ प्राणों को हिलकोरती
प्राणों में सिहरन पुलकन जगाते
प्रणय के रंगीन इंद्रधनु पलकों में सजाते
मदिर उल्लास में जैसे निचोड़ते से एक दूजे को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अजब देश
अजब नगरी
अजब भेस

देह अलग
मन भी अलग

नयनों से बतियाते रंगीन पक्षी
ये किस देश से आए हैं?

कैसे घुस आए इंद्रप्रस्थ में?
पंख अगर होते तो हम भी उड़ते
लेकिन गहरी नींद में हम पंख लगा ही लेते
बताएँ कैसे?

अपने विशाल सपनों में
हम इंद्रलोक में भी भ्रमण कर आते
संग-संग हवा भी घूम आती

ये कैसी सरगोशियाँ?
किसकी आवाज़?
कहाँ से आ रही ये आवाज़ जाने अनजाने
बहती समूची देह में लरज़िश बनकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौन छू रहा है मुझे?

बोल रहा है कोई
कानों में अजनबी भाषा

तकियों के बीच पड़े-पड़े
लब से लब जुड़े-जुड़े
देह से देह
मन से मन
चुम्बन ही चुम्बन
चुम्बन ही चुम्बन...

ये सुख है इंद्रप्रस्थ का
जहाँ पाँच भाइयों ने
एक ही स्त्री से जोड़ा था रिश्ता

यह कैसा रिश्ता...?
यह कैसा समाज?
क्या आज के समाज से
अलग है यह समाज?

परंतु ये तो पूज्य वर्ग हैं
हमारे परे
किंतु मन से दूर नहीं

द्रौपदी
एक मर्यादापूर्ण स्त्री का जुनून
जिसे करना पड़ा साझा
पाँचों के बीच समान रूप से
अपनी भावनाएँ, अपना अनुराग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसे हुआ होगा संभव
उन पाँचों के बीच
अपने को साझा करना समान रूप से
बाँटना बराबर-बराबर अपने
मनोभाव, भावातिरेक, कामोन्माद
पाँचों पुरुष देहों को
अपने उरोजों के बीच समेटना
समान उमंग और प्रेम देना

यह सब संभव तो है
परंतु एक ही के साथ
एक ही से होता है वह
अंतरंग दीर्घ प्रेम संबंध
हो सकता है वह एक केवल अर्जुन ही

देर से आता है, दूर से आता
परंतु आता है तो केवल उसी का स्वप्न

वो लिपट जाती कहती है
आज की रात न जा
आज की रात युगों-युगों में आई है

दौड़कर आओ मेरे आलिंगन में
रात-भर की जागी हूँ
सपनों से तुम्हें माँगा और चाहा है
अब देर न करो अर्जुन
आओ तुरंत
बताओ मैं कामासक्त जीऊँ कैसे

देर क्यों कर रहे हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या मेरी याद नहीं सताती
बेचैन नहीं करती
इसका उत्तर दो
स्वयं आकर बताओ

मेरे अश्रुओं को अपने होंठों से चूम
यह जलन मिटाओ
आज की रात न जा
और कुछ देर ठहर

आए जीवन में बहार बनके
जीवन में उपहार बनके
ऐसा प्रेम तो था संभावनाओं के परे
क्योंकि विवाह तो हुआ था पाँच पुरुषों से

अरे, यह क्या हुआ
पाँचों के चेहरे तो अर्जुन के हैं
जिधर देखो उधर अर्जुन
सर्वत्र अर्जुन ही अर्जुन

स्वप्न विभोर द्रौपदी
आनंद विभोर द्रौपदी
प्रेम विह्वल, उन्मद मदन-मनोरथ
सुख-विभोर द्रौपदी

रात-रानी के फूलों
रजनीगंधा से सुगंधित
शीतल मलय पवन
चमेली के निकुंजवन को आलिंगित कर रहा

भँवरों का गुँजन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोयल की कूक मन को आनंदित कर रही
बसंत ऋतु अपनी पूर्णता प्राप्त कर इठला रही
तमाल वृक्ष की कस्तूरी जैसी सुगंध फैल रही
चाँदनी की चमक वन के अंधेरे के साथ मिलकर
एक नए रंग से पूरे जंगल को घेर रही।

कामदेव के बाणों जैसे
किसी शुष्क हृदय को भी भेद
शृंगार के पावन रस से भर देने में समर्थ
औचक खिले रंग-बिरंगे जंगली फूलों के गुच्छे
झूम-झूम लहरा रहे हैं

द्रौपदी इठलाती हुई
प्रिय मिलन की प्रसन्नता आँखों में लिये
ढूँढ रही अर्जुन को
वे आएँ
मुझे चूम लें और मैं उनसे लिपट जाऊँ

अर्जुन का सर्वस्व एक ही नारी में समाहित है
द्रौपदी ही द्रौपदी
जहाँ देखो वहीं द्रौपदी
अर्जुन बेचैन खोज रहे हैं
उसी वन में तड़पते हुए पुकार रहे
कहाँ हो मेरी प्रिय
मेरी द्रौपदी

सुनती है द्रौपदी यह पुकार
और रुक जाती
दूर से देखती विह्वल प्रेमी की व्यग्रता
और गुनगुनाने लगती
धीरे-धीरे स्वर ऊँचा करती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्जुन तक पहुँचती हैं
स्वर लहरियाँ

तेरे बिन कैसे जाऊँ
सजना-सजना...
ढूँढू तुझे नगर-नगर, डगर-डगर
बिन तेरे नहीं जी पाऊँ
सजना-सजना...

इसी स्वर लहरी से बँधे
मंत्रमुग्ध अर्जुन किसी मृग सा
कुलाँचे भरते पहुँचते हैं

बाँहें फैलाकर प्रेमी युगल
बँध जाते एक हो जाते
अधरों पर अधर साँसों में घुलती साँसें
एक दूजे की गंध की भीनी लहर में तृप्त करते अभ्यंतर

एक दूसरे को प्यार की अमृतधारा से नहलाते
अंगों में कौंधती विद्युत तरंगों से
उद्वेलित कामनाएँ प्राणों को हिलकोरती
प्राणों में सिहरन पुलकन जगाते
प्रणय के रंगीन इंद्रधनु पलकों में सजाते
मदिर उल्लास में जैसे निचोड़ते से एक दूजे को
जाने कितनी देर एक प्राण दो देह बने खड़े बुत बनकर

प्रेरित अंतस के किस इंगित से
फिर साथ वे बढ़ चले
पास ही बने लता-तरुओं से बने कुंज भवन में
लगा था जहाँ स्वागत में उनके
कोमल दूब और फूलों का बिस्तर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस शीतल हरित एकांत मंडप में प्रकृति के

द्रौपदी ने आँखें खोलीं
चंद्रमा के प्रकाश में चमकते
द्रौपदी के चंद्रमुख को देख
लालसा से दीप्त हो उठे अर्जुन के नयन
उन नयनों में व्याप्त लालसा और कामना को देख
लज्जा से युक्त द्रौपदी की आँखें झुक गईं
दोनों के हृदय में कामना की आँधी
समान रूप से बहने लगी
दोनों के रुधिर में वासना-वह्नि
धधक-धधक जल उठी
शरीर का ताप बढ़ता ही रहा
आह, ये कैसे हो रहा

हाँ सबकुछ ठीक वैसे ही घटता जा रहा
जैसे-जैसे द्रौपदी की इच्छा हो रही
अर्जुन ठीक वैसे ही व्यवहार कर रहे
द्रौपदी के इंगित से नियंत्रित
उनके पौरुष उत्तेजित हृदय की आकांक्षा
आह, यह कोई स्वप्न है क्या

द्रौपदी की बाँहें आगे बढ़ीं
और मिल गई अर्जुन की बाँहों से
दोनों प्रगाढ़ आलिंगन में निबद्ध
अर्जुन अधलेटे
द्रौपदी उनके ऊपर झुकी
दोनों दोनों को विवस्त्र करते
कितना मादक रतिक्रीड़ा का आरंभ
द्रौपदी की बाँहों से आलिंगित
उसके स्तनों के भार से दबे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठौर-कुठौर द्रौपदी के नखों और दाँतों द्वारा
नोंचे और काटे जाते

अधरामृत पान का छूटना कष्टदायक था
परंतु सुरत रूपी समुद्र में
अवगाहन हेतु आवश्यक भी

उत्तेजना की सुगंधी से भरी
उतप्त साँसों की सुगंध से उत्साहित
अर्जुन ने लेट कर अपने ऊपर द्रौपदी को घसीट लिया
द्रौपदी उत्साहित हो उठी
लज्जा में डूबी हुई अर्जुन की छाती पर लेट
उसने भी साहस पूर्वक विपरीत रति प्रारंभ की
जाँघें स्थिर, हाथ आलिंगन में बाँधे
ढलकर आगे आई केश राशि में
द्रौपदी का चंद्रमुख छिपा हुआ सा

सब कुछ रुका हुआ सा
सारी धरती सारा आकाश
सागर, वायु, चंद्रमा सब कुछ स्थिर
सारी प्रकृति, सारा ब्रह्मांड स्तब्ध

गति थी कहीं
तो केवल दोनों प्रेमियों के हृदय में
जहाँ परमानंद प्राप्ति का सुख हिलोरें ले रहा

बेसुध द्रौपदी थकान से चूर
आँखें बंद किए जाने कितनी देर लेटी रही

ब्रह्मानंद लीन अर्जुन सोच रहे
आह, स्त्रियाँ कितनी कुशलता से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संभालती निबटाती हाथ आया काम
जिम्मेदारियाँ अपनी घर और बाहर की
विद्वता में, वीरता में
कैसे-कैसे शीर्ष मानक स्थापित किए,

कलाएँ इनके हाथों में पड़ कैसे निखर उठतीं
पाक कला से लेकर काम कला तक
प्राप्त करती कैसी असाध्य ऊँचाइयाँ
बराबर नहीं, निश्चय ही स्त्रियाँ बेहतर हैं पुरुषों से

तभी कानों में दासी की आवाज़ गूँजी
पहले धीरे-धीरे, फिर तेज़-तेज़
लगा पैरों को पकड़ कोई हिला रहा

द्रौपदी की पलकें खुलीं सामने दासी का थोड़ा घबराया सा मुख दिखा
जागिए, जागिए, देवी
दिन में सोने से विचित्र स्वप्न आते हैं
उठिए मैं जल लाती हूँ
आपका तो मुख विवर्ण हो रहा
शरीर पसीने से भीग चुका,
मेरे पंखा झलने से भी कुछ राहत नहीं
देवी आप स्वस्थ तो हैं न?

द्रौपदी क्या बोलती
स्वप्न याद कर वह
स्वयं ही स्वयं से शर्माए जा रही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

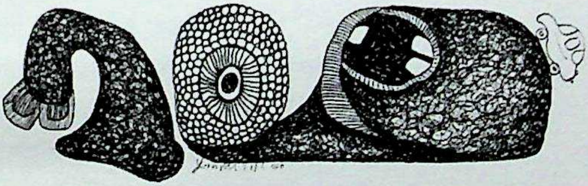

जब तक जीवन है

विद्या-विवेक, ज्ञान-ध्यान सब धरे के धरे रह जाते
असत्य को सत्य अनैतिक को नैतिक बतलाते
सारे कुतर्क सिर चढ़ जाते
लोभी मन तरह-तरह के उदाहरण
परंपरा का आश्वासन खोज-खोज लाता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब तक जीवन है
लोभ, लाभ, मत्सर ने किसको छोड़ा
माया से कौन बचा है
मोह ने किसका अभिमान नहीं तोड़ा

ऐसी कहाँ कौन जवानी होगी
रूप रस माधुर्य की जो नहीं दीवानी होगी

अलौकिक सुन्दरता का पाश अमोघ अस्त्र
बेधता जिसे कर विवश उसे खींच लाता

विद्या-विवेक, ज्ञान-ध्यान सब धरे के धरे रह जाते
असत्य को सत्य अनैतिक को नैतिक बतलाते
सारे कुतर्क सिर चढ़ जाते
लोभी मन तरह-तरह के उदाहरण
परंपरा का आश्वासन खोज-खोज लाता

काम-वासना से लिप्त मन
भोग की लालसा को दबा कब पाता?
भीतर दबा वह पशु मन
जिसे नियम संयम से तप और तपस्या के ताप से
बार-बार दबाया,
राग-रंग, रस में डूबने की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर लालसा का अमृत पान जाग उठता दहाड़
संदर्भ से काटकर करता प्रस्तुत गलत-सही उदाहरण

अपनी विजय दुंदुभी बजाता
धर्म के नाम पर, अधर्म की ध्वजा इस तरह फहराता
कि नैतिक-अनैतिक बन जाता

हाय, युधिष्ठिर! वचन की रस्सियों से जकड़े
धर्म के खूँटे से बंधे बाहरी आक्रमणों से डरे
द्रुपद का जिस तरह तुम सबने मिलकर शिकार किया
काल के पन्नों में दर्ज हो चुका है अतिचार
उसे लेकर पछताने से अब क्या होगा?

आज अब इस अकेले निर्जन वन में
शिला पर बैठ आँसुओं भरी आँखें लिए
यही सब सोच पछता रहे युधिष्ठिर।

बड़े भ्राता होने के कारण पहला अधिकार उन्हीं का था
आनंद रहित संभोग और स्खलन के बाद प्राप्त ज्ञान ने
विचलित किया इतना कि ठहरना कठिन था द्रौपदी के कक्ष में
भाग आए इस निर्जन एकांत में
पर कहाँ छोड़ा साथ
विचारों के प्रवाह ने

आते जा रहे थे स्वयंवर के दृश्य मानस पटल पर
किसी चलचित्र की भाँति
संपूर्ण सर्वांग सुंदरी, मादक यौवन से भरपूर
परलोक से आई अप्सरा समान
वरमाला लिए, अपूर्व आभा बिखेरती
किसी देवी सा द्रौपदी का स्वयंवर सभा में पदार्पण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस अपार रूप राशि को देख
सबकी साँसें तेज़
आँखें टिकी और मुँह खुले के खुले
धृष्टद्युम्न द्वारा शर्तों की घोषणा
और एक के बाद एक
महाप्रतापी योद्धाओं का मंच पर आगमन
असफलता से लज्जित उनकी वापसी
और सबसे अंत में किसी सिंह की भाँति भव्य चाल से चलते
ब्राह्मण वेश में आत्मविश्वास से भरे अर्जुन का मंच पर आगमन

उसके व्यक्तित्व की भव्यता से एक ओर स्तंभित पूरी सभा
दूसरी ओर द्रौपदी की आँखों में उमड़ा प्रीत का सागर
अर्जुन की सफलता ने
फैला दी थी एक अपूर्व आभा द्रौपदी के मुख पर
संतोष द्रुपद के मुख पर
प्रसन्नता से ओत-प्रोत धृष्टद्युम्न
अर्जुन के मृगछाल का कोना पकड़े द्रौपदी का प्रस्थान
असफल राजाओं का कोलाहल
कृष्ण, बलराम का बीच बचाव
भीम का रौद्र रूप
कुंती के होंठों पर
वर्षों बाद आई मुस्कान

जैसे रोने का मन हो और
आँखों में चोट लग जाए
वैसे ही लगा था पांडवों को
द्रौपदी के प्रति माँ का दिया गया निर्देश

द्रौपदी की अपार रूप-राशि से चौंधियाए
वर्षों-वर्षों तक आपत्तियों, विपत्तियों का सामना करते
माँगकर पेट भरते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्राह्मण वेश धरे इस नगर से उस नगर डोलते
सब प्रकार से प्रताड़ित और पीड़ित पांडव भ्राताओं के सामने एक ऐसा आमंत्रण
जिसने किया चूर-चूर सारा सद्गुणी संयम

क्षण मात्र में उनका राजसी स्वभाव जग पड़ा
ऐसा आमंत्रण पा हो उठा तामसी
युधिष्ठिर ने की फिर घोषणा
सभी भ्राताओं के साथ द्रौपदी-विवाह हुआ,

बहुत छटपटाया एक असहाय पिता
अपनी बेटी को अर्जुन की पत्नी बनने की बजाय
पांडवों के सहभोज की थाली बनते देख।

परंतु पाप था बाक़ी चारों के मन में अर्जुन असमंजस में
कौन सुनता द्रुपद के द्वारा उठाए नैतिकता, धर्म और न्याय के प्रश्नों को
और देता समुचित समाधान
पूछता कौन द्रुपद के स्वर में स्वर मिला
क्या लागू रहेगा यही नियम
भविष्य में भाइयों द्वारा किए गए अन्य विवाहों पर?

युधिष्ठिर ने नहीं बाँटी देविका
भीम ने नहीं बाँटी बालंधरा और हिडिम्बा
उलूपी, चित्रांगदा और सुभद्रा भी नहीं बाँटी गई
न नकुल ने बाँटी करेनुमती और
न सहदेव ने विजया।

किसी अन्य संदर्भ में ली गई
एक विचित्र प्रतिज्ञा के उल्लेख के भारी भरकम भार
और धर्म के उद्धरणों की ग़लत-सही व्याख्या के तले दब गए
द्रुपद के प्रश्न
वैसे ही जैसे किसी भी युद्ध में सारे नियम सारी मर्यादाएँ एक के बाद एक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विजय की महत्त्वाकांक्षा के धधकते हवनकुंड में होती जाती हैं स्वाहा...
स्वाहा...

फिर भी नहीं भूला युधिष्ठिर को विवाह-मंडप की ओर
सखियों के बीच घिरी द्रौपदी की दृष्टि से टकराना अपनी दृष्टि का
जैसे टकराना
वधस्थल की ओर जाते
बलि पशु की याचना भरी करुण दृष्टि से

क्षण भर को भी तो नहीं हट पाई कभी वह दृष्टि
युधिष्ठिर की स्मृति से
फिर भी न्याय की आवाज़ कहाँ बच पाती है
अन्याय के पीछे छिपे स्वार्थ के दबाव से
वासना की आँधी के समक्ष
बुद्धि, विवेक और स्वानुशासन का दीया?

बार-बार लोभ हर लेता बुद्धि
खड़ा पाते धर्मराज अपने को अधर्म के द्वार पर

बार-बार वापस लौटना द्रौपदी-कक्ष से सूर्योदय के साथ
फिर-फिर वही पश्चाताप फिर-फिर वही वासनाधीन
रस लोभी लम्पट मन प्रेरित सहवास

इस प्रक्रिया से गुज़रते बार-बार
जैसे धर्मराज का प्रखर तेज मद्धिम होता गया
बार-बार खिंचने वाले रबड़ की कम होती जाती संकुचन शक्ति-सी
बचा नहीं उनमें कोई प्रतिरोध
शकुनि के उकसाने पर काँपे नहीं उनके हाथ
द्रौपदी को दाँव पर लगाते
कृष्ण के सिखाते ही बोल पड़े
अश्वथामा हतो नरो वा कुंजरो...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

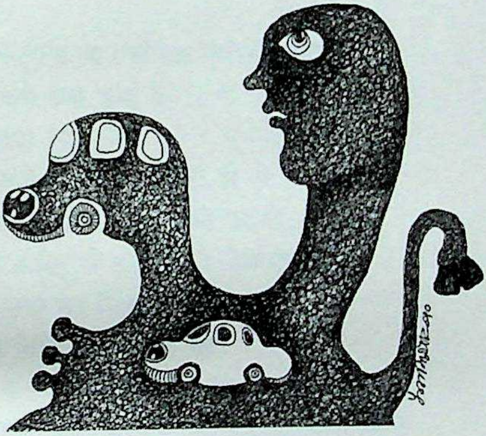

माँ जानती थी

हमारे बीच का मौन था इतना मुखर, इतना सघन
कि बाद में कुछ बोलकर भी
वैसा अलौकिक संवाद संभव नहीं हुआ कृष्णा के साथ फिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विधाता
एक कल्पना या रचयिता सर्वशक्तिमान
जब चाहे सब कुछ दे
कल्पवृक्ष-सा
जब चाहे सब कुछ वापस ले ले
हमारी समझ से परे उसकी करनी
हमारी समझ से परे उसकी अकर्मण्यता
पाप-पुण्य का नियंता
करता प्रेरित कुछ करने को
फिर करने भी नहीं देता कुछ भी
निर्णायक जन्म पुनर्जन्म का रचता ऐसा विधान
नहीं रह पाता जीवन एक समान

रात के बाद दिन
दिन के बाद रात के आने का क्रम
चलता ही रहता जीवन में भी
आता है कभी भाग्य का रूप धर
तो कभी संजोग का मुखौटा पहन
परंतु वह आता है ठीक उसी वक़्त
जब छोड़ चुके होते सारी उम्मीदें
या फिर जब निश्चिंत हो मना रहे होते हैं उत्सव
भूल बुरे समय को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिस वर्ष ख़ूब लहराती फसल
उसी वर्ष आ जाती जमकर बाढ़
भरी-भरी बालियों से झूमती फसल
और कटने के पहले ओलों की बरसात।

क्या अपने किए पर ख़ुद ही की नज़र लगती?

लाख के जलते घर से निकल
बरसों-बरस रहे झेलते हम निर्वासन, निरादर,
कौरवों के भावी षड्यंत्रों से डरे
पहचाने जाने के भय से आक्रांत
बदलते रहे जंगल से जंगल बस्ती से बस्ती, नगर से नगर

ऐसे में जब आया निर्देश सखा कृष्ण का
पांचाल नरेश की राजकुमारी के स्वयंवर में शामिल होने का
तो मेरा मन बल्लियों उछल पड़ा

बाक़ी भ्राता समझें न समझें सखा का निर्देश
माँ और मेरे लिए था यह शुभ संकेत
वाम विधाता अब होने वाले हैं सदय

मन में जैसे विश्व विजयी होने के भाव थे
जब लौट रहे थे वापस हम स्वयंवर से

आगे-आगे सारे भ्राता थोड़ा पीछे मैं
और मेरी मृगछाला का कोना पकड़े
अप्सराओं की अप्सरा रूप, गुण की पराकाष्ठा
हमारे सौभाग्य की देवी द्रौपदी

विष्णु लक्ष्मी को पाकर
शिव पार्वती को पाकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं हुए होंगे इतने प्रसन्न जितना मैं था
जीवन सहचरी के रूप में द्रौपदी को पाकर।

भारत के सभी नामी प्रतापी वीरों की असफलता के बाद मिली सफलता
मेरे आनंद को बढ़ा रही थी कई गुणा
सबसे बड़ी बात थी कौरवों की पराजय
और उससे भी बड़ी बात थी
अपने सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी कर्ण को मुँह लटकाए
ख़ाली हाथ वापस जाते देखना

स्वयंवर सभा से घर तक
मैं मन ही मन करता रहा दुनिया-जहाँ की बातें
उड़ेलता रहा अपना प्यार
स्नेह से दुलराता रहा द्रौपदी के अंग-प्रत्यंग
और आश्चर्य कि, देवी देती रहीं
सारी बातों का समुचित उत्तर

हमारे बीच का मौन था इतना मुखर, इतना सघन
कि बाद में कुछ बोलकर भी
वैसा अलौकिक संवाद संभव नहीं हुआ कृष्णा के साथ फिर

लज्जा से झुके अपने नयनों को
कभी उठाकर तो कभी गिराकर
कभी पलकें झपकाकर कभी पाँवों की चाल से
कभी कोमल चपल ऊँगलियों के इंगित से
कभी मुस्कान से तो कभी अपने गांभीर्य से
जाने कितने-कितने संवाद
होते रहे संप्रेषित हम दोनों के बीच
सच, नहीं होती प्रेम की कोई भाषा

पता नहीं मैं सोया था या जगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँखें खुली थीं या किसी स्वप्न में डूबी
लेकिन था मैं सातवें आसमान पर
जंगल का बीहड़ रास्ता कैसे कटा पता नहीं
याज्ञसेनी के अनभ्यस्त पाँवों को जैसे कोई कष्ट ही नहीं हुआ
पता ही नहीं धूप थी या छाया थी
या कर रहे थे हम यात्रा पुष्पक विमान में

यह जादुई माहौल टूटा
दरवाज़ा खटखटाने की कर्कश ध्वनि से
हमारे अस्थाई निवास
कुंभकार के टूटे-फूटे द्वार पर
थाप दे, माँ कुंती को पुकार रहे थे बड़े भ्राता
और जब दिवा-स्वप्न टूटा
तो फिर बहुत कुछ टूटने लगा
ऊँचे स्वर में घोषणा की भ्राता युधिष्ठिर ने

माँ देखो हम आज एक दुर्लभ वस्तु लाए हैं,
किवाड़ खोलकर देखो
तुम्हारे पुत्र, विजयी होकर लौटे हैं

दिमाग़ को झटका लगा
यह कौन-सा तरीक़ा था सूचना देने का बहू के आगमन की?

क्या द्रौपदी कोई 'वस्तु' थी
वह तो थी धरती की सर्वश्रेष्ठ बहू
भ्राता ने ससम्मान यह क्यों नहीं कहा—
माँ पार्थ ने स्वयंवर जीता है
राजकुमारी हमारे साथ आई हैं,
राजकुमारी द्रौपदी!
द्वार खोलो
चरण रज दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आशीर्वाद दो
आरती उतारो
स्वागत करो

परंतु बहुत कुछ था शेष
बहुत कुछ था टूटना
बड़े भ्रम थे दूर होने को

हा विधाता!
खेल ही दिया तुमने अपना वही पुराना खेल
हे विदूषक
कुछ देर तो ठहरते और
सातवें आसमान से पटक दिया मुझे
अतल पाताल के अंधेरों में।

माँ जानती थी हम कहाँ गए थे
और किस उद्देश्य से गए थे
तिल भर भी शंका नहीं थी मन में उनके
अपने पार्थ के सामर्थ्य पर
ख़ूब जानती थी वे
अर्जुन लाएगा उनके लिए राजकुमारी बहू
फिर क्यों कहा उन्होंने
मिलकर सम भाग में बाँट लो सारे भाई
आपस में बराबर, सदा की तरह।

हाय अर्जुन!
होना था क्यों
यह आकस्मिक वज्रपात तेरे ही सिर पर!

कहते हैं माँ से बेहतर कोई नहीं जानता
अपने जायों का अंतर मन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो क्या माँ ने पढ़ लिया था
बाक़ी भ्राताओं के हृदय में
द्रौपदी के प्रति उठती कोमल भावनाओं को
वरना क्यों दोहराती अपनी आज्ञा
बाहर निकल वस्तु स्थिति से परिचित होने के बाद भी

हे भगवन अब क्या होगा?
मेरी आज्ञा की अवहेलना
होगी अपमानजनक सबके लिए
तुम लोग बनोगे धर्मद्रोही
और पालन होगा अपमानजनक, द्रौपदी के लिए
जिसकी लज्जा की नहीं रहेगी कोई सीमा

ऊपर-ऊपर से तो सबको थी चिंता
द्रौपदी के मान-सम्मान की
परंतु माँ के वचनों की रक्षा हेतु
सभी थे उससे भी अधिक चिंतित एकमत
मैं इस तरह घिरा इस हास्यास्पद नाटक में
कि व्यक्त नहीं कर पाया अपनी असहमति

धर्मराज ने निर्णय दे दिया था
अब बचा भी क्या था बोलने को
यद्यपि हाहाकार करता हृदय
दुत्कारता था मुझे बार-बार
अभी तक जिसके प्रेम में पागल हो रहे थे
कौन-सा मुँह लेकर करोगे उसका सामना
कितने विश्वास, प्यार और गर्व के साथ
तुम्हारी मृगछाला का कोना पकड़े
विदा हुई थी वह पिता के धाम से
क्या यही लज्जा, यही अपमान भोगने?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परंतु अधोमुख अर्जुन बोला तो ठीक विपरीत
माँ का निर्देश ही मेरा धर्म है
जीवन भर क्या क्षमा कर पाओगे अर्जुन
अपने को इस दुष्कृत्य के लिए?

सोच रहे हैं पार्थ
जंगल के एकांत में खिन्न और उदास
बैठे हुए सर झुकाए शिला पर

स्वयं को ही देते उलाहना
करते भर्त्सना स्वयं ही स्वयं की
अरे मूर्ख, क्यों नहीं आया तेरी समझ में
कोई भी पुरुष कैसे नहीं होगा आसक्त याज्ञसेनी के रूप से
यदि वह नहीं है क्लीव या जड़।

किसका दिल नहीं मचलेगा कृष्णा के साहचर्य हेतु
युधिष्ठिर के मन में भी कामना की गोपन आग
जल रही हो तो क्या आश्चर्य
बड़े भाई के नाते
राज और राज सिंहासन उन्हीं का होगा
फिर राजकुमारी क्यों नहीं

भीम भी तो सोचते होंगे
यदि नहीं खड़े होते वे
दुष्ट राजाओं और द्रोपदी के बीच
तो हो पाता क्या स्वयंवर पूर्ण निर्विघ्न
फिर भोजन लालची भीम के लिए तो
पाक कला में निपुणता कृष्णा की
और अधिक काम्य बना रही होगी उसे

नकुल तो हम सब में सबसे सुन्दर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भला वे क्यों नहीं समझे स्वयं को सबसे योग्य वर
सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी द्रौपदी हेतु

भाई सहदेव ने तो कर नक्षत्रों की गणना
लिया होगा जान भविष्य
और ख़ुशी से खिल गई होंगी बाछें

आह मंदमति मूढ़
तू क्यों नहीं देख समझ पाया यह सारा छल छद्म?

सच है कि विपत्ति काल में
अपने भी नहीं देते साथ
सखा कृष्ण ने भी ली अपना मुद्रा उपदेशक की

देखा है जिसने भी कृष्णा को
वह कैसे पा सकता है शांति
लज्जावश मुख से नहीं कहने पर भी
कहेगा कौन रख धर्म को साक्षी
नहीं है वह आसक्त कृष्णा के प्रति
सिर्फ़ अर्जुन को मिले कृष्णा
तो निश्चय ही ईर्ष्यान्वित होंगे अन्य भ्राता
उपजेगा भ्रातृविवाद पांचों पांडवों में
संभव नहीं हो पाएगा फिर दमन दुष्ट दुराचारी कौरवों का
माँ के मुँह से निकला वाक्य सदा होता है मंगलमय ही
समझबूझ धर्मराज ने शायद उत्पन्न कर दी ऐसी परिस्थिति
ताकि हो सके धर्म की स्थापना पृथ्वी पर
कृष्णा का तो जन्म ही हुआ है धर्म की रक्षा हेतु।

अब ऊहापोह की कहाँ बची थी गुंजाइश कोई
और फिर मैंने भी बेमन से ही कहा था
बड़े भाई और माता की आज्ञा का पालन ही तो है मेरा धर्म

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो अब पछताना क्या
भ्राताओं के प्रति वैमनस्य क्यों?

मलिन मन, मलिन मुख
बेहतर है एकांतवास में पछताते रहने से
मुक्ति का मार्ग खोजना
कृष्ण के सखा अर्जुन सखी कृष्णा
सोचो मार्ग कोई ऐसा
कि मरे साँप और लाठी भी न टूटे
मन को कष्ट भी न हो और प्रतिज्ञा भी न टूटे
यही तो विशेषता है मानव मन की
कठिन से कठिन परिस्थितियों में से जाता है निकल
उर्वर मस्तिष्क गहन चिंतन ढूँढ ही लेते हैं समाधान

प्रतिज्ञा तो यही है कि
अपनी निर्धारित अवधि को छोड़
कोई भ्राता नहीं होगा दाखिल
रहेगा दूर कृष्णा के शयन कक्ष से
दूसरे भ्राताओं के निर्धारित समय की अवधि में
और बारह वर्षों का वनवास उल्लंघन के दोषी को
तो ठीक यही प्रबंध चले।

अपनी अवधि तो अपनी ही है
बाक़ी में वर्जित केवल
पांचाली के शयनकक्ष में जाना
परंतु कहाँ है वर्जित पांचाली से मिलना
उसके शयनकक्ष से बाहर।

मैं अर्जुन
पति तो हूँ ही उसका
है यही सत्य सदा सर्वदा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

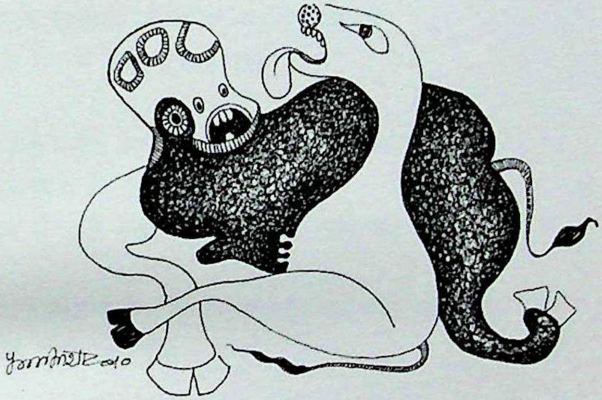

मोर नाचते हैं

वे मेरे सिरहाने जब सोए
जिस तकिए पर मेरे ख़्वाब टूटते थे
आलिंगन में मस्त
अब उसी जगह मैं किसी और को क्या दे पाऊँगी
सच है वे मेरे पति भी हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाँदनी रात है दरवाज़ा खुलता है
एक पति दरवाज़ा बंद करते-करते आता है
स्त्री के मन में कुछ उत्साह नहीं

मगर उसे अपने आपको उसके हवाले करना ही है
वो वचनबद्ध है लेटी हुई शर्माई हुई
संकोच में डूबी देख रही है कि वो आगे बढ़ रहे हैं

उन्होंने उसका नारीत्व ले लिया और दबे पाँव चले गए
वो रोई, रोई, ख़ूब रोई

सुबह होती है
कुछ खोया-खोया सा मन होता
वो क्या है जो मेरे बचपन के साथ रहा
और आज उसे मेरे पति के रूप में एक पुरुष ने लूटा

दूसरे रोज़ दूसरे भाई आएँगे
वो भी पति हैं
मैं उन्हें ये तो नहीं दे सकूँगी असंभव है

दूसरी रात
फिर एक सुहाग की रात
दासी ने आकर मेरी चोली की गाँठ खोल दी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और बाक़ी गाँठें पति ने खोली

मैं शर्माई
हाथों से अपनी आँखें बंद की
वो समझ गए
कमरे के प्रकाश को थोड़ा मन्द कर
हाथ फेरते हुए सीने से लिपटा लिया

सुबह मैंने अपने आपको बिस्तर में पाया
उन्हें क्या मिला?
तृप्ति?
मुझे एक नए संबंध का अनुभव?
समझ में नहीं आया ये क्या हुआ

तीसरी रात भी थोड़ी सी चाँदनी थी,
मन चाहा कमल ताल में
निर्वस्त्र होकर प्रतीक्षा करूँ तीसरे पति पुरुष की

न जाने क्यों मेरी साँसें दौड़ रहीं
मेरा बदन गरम क्यों हो रहा
मैं व्याकुल क्यों हूँ?

नहीं आए अब तक...

अभिसार का वक़्त हो चला
वो भी कपड़े उतारकर आते हैं
मैं उन्हें कमलताल में खींच लेती हूँ
स्वर्ग ही स्वर्ग है
मेरे उरोज उभरते हैं
उनका तना हुआ शरीर मुझमें खो जाता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब समझ में आता है कि
वह कमलताल था कल्पवृक्ष की छाया में
जो-जो कामसुख चाहा
जितना-जितना और जैसा-जैसा
वैसा ही और उतना-उतना ही देता गया कल्पवृक्ष
समय जैसे ठहर गया।

हम पागल से ख़ुशी में मदहोश
वे चुम्बनों से मुझे घेर लेते हैं
सुबह तक हम कई तरह से
प्रेम में मग्न दोनों के शरीर अपनी सीमाओं का
बार-बार अतिक्रमण कर लौट आते हैं मिलते हैं।

ये रात सुखद ही सुखद थी

उन्हें जाता देख पूछती हूँ
फिर कब आओगे?
वो मुड़कर देखते हैं
हाँ आऊँगा जब मेरी बारी आएगी
मगर तुम भूल न जाना उस सुख को जो साझा है केवल हम दोनों का
उसकी आँखें भर जाती हैं कुछ कह नहीं पातीं।

सहना ही मुझे अन्य पतियों को
क्या वह दूसरे पतियों को इतना सुख दे पाती?
या उन्हें देखकर घबराती है—
    जब वो आएँगे तो मैं क्या दूँगी
    उन्हें जितना स्नेह चाहिए
    क्या मैं दे पाऊँगी?

    वे मेरे सिरहाने जब सोए
    जिस तकिए पर मेरे ख़्वाब टूटते थे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आलिंगन में मस्त
अब उसी जगह मैं किसी और को क्या दे पाऊँगी
सच है वे मेरे पति भी हैं
मगर क्या पति होना ही सब कुछ होता है?

उनकी छूअन मुझमें कोई उत्तेजना नहीं जगा पाती
मेरे स्तन केवल स्तन रहते हैं
मधु कलश नहीं बन पाते
और वे जब भोग के चरम क्षणों को जी रहे होते हैं
तब मैं अपनी अतृप्ति और उदासी के सागर में डूब रही होती हूँ

कब तक आस लगाए बैठी रहूँ
वो आएँ न आएँ कैसे कहूँ
कबूतर का सहारा लेकर संदेश तो भेज ही सकती हूँ

कबूतर, मेरा ये संदेश महाराज अर्जुन को देना
उस वक़्त देना जब वो अकेले हो
छोटे से संदेश में लिख कर भिजवाया—

तुरंत आइए अब सही नहीं जाती जुदाई
जवाब लौटते कबूतर से भेजिए

चूमकर उसने कबूतर को छोड़ा
वो आसमान में फड़फड़ाता हुआ
तीर की तरह जाने-पहचाने महल में उतरा
महाराज अर्जुन के कक्ष में पहुँचा
महाराज बिस्तर पर लेटे थे
कबूतर जाकर उनके सीने पर बैठा

कबूतर देख अर्जुन चौंके
पास बुलाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कबूतर
जो था बिना झिझक उनके सीने पर बैठा
कबूतर के गले में कोई संदेश बंधा देखा
धड़कते दिल से संदेश पढ़ा
कुछ देर सोचा फिर तुरंत ये लिखकर
कि रात नहीं तो दिन सही
मिलन की जगह और वक़्त का संदेश भेजा

और फिर सिलसिला चल निकला

बारी वाले पति रात को असंतुष्ट चले गए
कुछ भी नहीं हुआ

द्रौपदी सोलह श्रृंगार कर
पथ पर आँख टिकाए बैठी रही
बाग़ में सफ़ेद मोर नाचते रहे
शुभ संकेत देते रहे
तभी अर्जुन पधारे
द्रौपदी अर्जुन से लिपट गई

तय हो गया कि दिन उनके हैं
रात चाहें बारी वाले किसी भी पति की हो
द्रौपदी के जीवन में अब बहार ही बहार थी
सुख ही सुख था
ये सिलसिला चलता रहा
शायद इसके अलावा कोई चारा न था

अन्याय के प्रतिकार का यही था एकमात्र रास्ता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

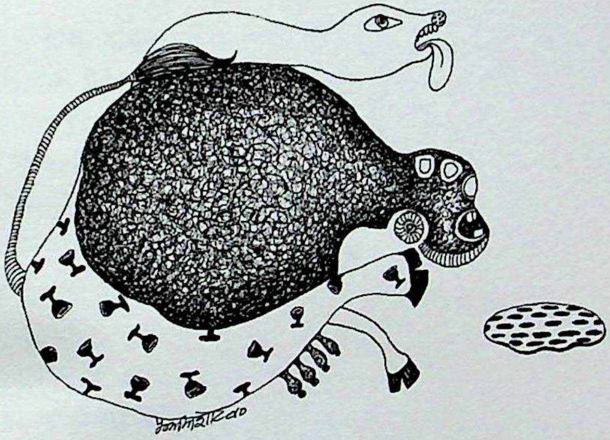

लहरों में खड़ी

हाय! कुंती और कितना गिरेगी
और क्या-क्या अधम पातक जुड़ेंगे तेरे नाम से?
कौन-सा आदर्श जाएगी छोड़ स्त्री समुदाय के लिए?
अभी तो शेष है निर्णायक महायुद्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लहरों में खड़ी अधखिली कलियों सी
कुँआरी एक कन्या
मासूम निगाहों से देख रही अपलक
अपने जिगर के टुकड़े को
विदा किया जिसे पिटारी में रखकर

कहती है पानी से
हे नदी, हे माँ
संभालकर ले जाना
जहाँ मेरे बच्चे का भविष्य हो
धारा संग बहती, प्रतिक्षण उससे दूर होती
न जाने किस अंजान मंज़िल
किस अज्ञात जीवन की ओर बढ़ती जा रही
टोकरी को संबोधित कर बुदबुदाती है—
मैं तुम्हारे पीछे आ नहीं सकती
तुम्हारे पिता सूर्यदेव ही संभालेंगे तुम्हें
उन्हीं की बाँहों में छोड़ रही पुत्र तुम्हें।

कोख से उठती कातर चीख़
रुक जाती भिंचे होंठों के बीच
कभी देखती अपने हाथों को
जिन्होंने अत्यंत निष्ठुरता से
किया था प्रवाह उस नवजात शिशु को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौंकती सी पूछती है अपने आपसे
क्या मेरे ही हैं ये हाथ?
किया जिन्होंने ऐसा कुकृत्य
धीरे-धीरे दूर होती जाती टोकरी
मसल-सी रही उसका हृदय
असहनीय वेदना, अपार व्यथा
कोई कुंद आरी रेत रही दिल-दिमाग़ को
अर्धमूर्छित अवस्था में पड़ी
उस किशोरी के कानों में गूँज रहे अब भी
सूर्यदेव की बहलाती फुसफुसाहट
बचपने में की गई अपनी भूल की
क्षमा माँगती उसकी गिड़गिड़ाहट को नकारती
उसे मनाती, धमकाती, समझाती
वह कोमल, परंतु दृढ़—

हे कुंती
कन्या शब्द की उत्पत्ति ही हुई है कम धातु से
अर्थात् चाहे जिस पुरुष की
इच्छा कर सकने वाली कन्या स्वतंत्र है

विवाह आदि संस्कार सब कृत्रिम हैं
अनावश्यक सामाजिक बंधन
निरर्थक हैं परंपरागत रीति-रिवाज
अत तुम मेरे साथ समागम करो

मिथ्या नहीं हो सकती ऋषि वाणी
व्यर्थ नहीं हो सकता मंत्रोच्चार
नहीं हो सकती निरर्थक
देवलोक से भूलोक तक की मेरी यात्रा
सार्थकता तो इसकी होकर रहेगी सिद्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निश्चित है अब तुम्हारा माँ बनना
एक देवोपम सूर्य पुत्र का।

समागम से संतुष्ट सूर्यदेव करते हैं प्रस्थान
सामाजिक अपवाद, बदनामी और लज्जा का करने को निराकरण
मिटाने को अपने कुकर्म का प्रमाण दे जाते हैं वरदान—

माँ बनने के बाद भी तुम
बन जाओगी पुन कुँवारी
अर्थात अक्षत योनि ही रहोगी*

होती है इच्छा तैरकर जाए
खींच लाए टोकरी
उस शिशु को छाती से लगाए
जिसे उसने जन्म दिया

परंतु कुछ भी न कर पाने के दुख ने
कुंती को कितना छला होगा

और तमाम जीवन छलता रहा
वह ढूँढती रही ख़ाली आँखों से अपने सुंदर बेटे को
नींद में सुनती थी उसकी आवाज़ और तिलमिला जाती
अपने यौवन को कोसती
आँखों से आँसू बरसाती
जिनकी नहीं थी कोई कद्र

किनारे से लौटती
दूध टपकते स्तनों को देखती है
जो सूर्य के वरदान स्वरूप
वापस लौट रहे हैं

* वनपर्व 307 वाँ अध्याय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शरीर के अंगों के साथ
पुनः कुँवारेपन की ओर।

सोचती है कुंती अपने महल के एकांत में बैठी
क्या है यह कुँवारापन
लौट आया जो उसे बनाता पुनः पावन

कौमार्य क्या है?
बिना सूँघा हुआ फूल?
बिना पिरोया मोती?
या हो सकती है एक मन:स्थिति भी।

शरीर के कुँवारेपन की
पुनः प्राप्ति के बावजूद
कहाँ मिटती है मन से
स्मृति उस कंचन सदृश्य चमकते
कवच-कुंडल सुशोभित
मृदु मुस्कान सुसज्जित होंठों वाले शिशु की
सुंदर नेत्र टकटकी लगाए देख रहे थे उसकी ओर।

क्या था बालक की उस दृष्टि में?
माँ के वात्सल्य की अमृतमयी धारा की आस
गोद में उठा चूमने, दुलराने की माँग
छाती से लगा अमृतपान का इंतज़ार
या एक करुण याचना
माँ की ममतामयी छाँव में जीने का अधिकार

और फिर प्रारंभिक भय
आशंका तथा लज्जा के बाद
क्या नहीं हुई थी वह
सूर्य के अनुपम सौंदर्य से प्रभावित?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या नहीं जगी थी उसमें कामेच्छा रत्ती भर भी
तृप्ति दायक सहवास के बाद?
क्या नहीं उमड़ा था
हृदय में उसके सूर्य के प्रति
पहले प्रेम का सैलाब?

डूब गया था जिसमें सबकुछ
समाज का भय
पुत्र के जन्म और पालने की समस्या
आने वाले कठिन समय की चिंता
एक अनजान राह पर चल पड़ने का डर।

लज्जा, संकोच कुछ भी तो नहीं बचा था
उस प्रेम उदधि में डूबने से

विदा माँगते सूर्य से लिपटी रही जाने कितनी देर तक
न कुछ कहना था, न कुछ पूछना
था तो बस प्रेम निस्वार्थ, निर्बाध, स्वर्गीय, अनुपम

सारे सुखों, सारे दुखों से परे
प्रेम और केवल प्रेम।

कौमार्य के लौटने के बाद भी
क्या वह भूल पाई उस प्रेम को
उस अद्‌भुत मिलन को
वह तो था उसके जीवन की एकमात्र संचित संपत्ति।

स्मृतियाँ सूर्य की, प्रेम में डूबी
स्मृतियाँ स्वर्ण शिशु की, दुख में डूबी
परंतु कराती एक अज्ञात सुख का भी एहसास
मन में जगाती एक आस एक विश्वास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि होगा जहाँ भी
चमकेगा वह एक दिन
आदित्य सा ही देदीप्यमान हो
फैलेगी उसकी यश-कीर्ति
सूर्य किरणों सी प्रकाशित करती प्रत्येक दिशा को
और तब वह जानेगी उसकी कथा
फूली नहीं समाएगी
गिनते हुए उसकी उपलब्धियाँ,
गूँगे के गुड़ सी ही सही
पर हर लेगी उसकी उपस्थिति का भान
उसके द्वारा जीवनभर झेले गए अपराधबोध की व्यथा।

फिर क्या अर्थ था
पुनः लौटे इस कौमार्य का
एक ढकोसला, एक पांखड
बार-बार दोहराए जाने वाले किसी कर्मकांड-सा।

बीतता रहा समय
या बीता कुछ भी नहीं
वहीं थम गया उसका समय
स्थिर हो गया वृक्ष की तरह
केवल बदलते मौसमों के साथ बदलते रहे पत्ते

उन्हीं झड़ते हुए पत्तों का सिरहाना बना सो गई वह
अपने ठहरे समय के बिछौने पर।

मौसम बदलते रहे
औरों का समय चलता रहा
घूमता रहा वृत्ताकार किसी कोल्हू के बैल सा
उसके रुके समय को केंद्र बना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घटनाएँ घटती रहीं
दुनिया बदलती रही
और जब जगी तो
वो राजकुमारी से महारानी बन चुकी थी
महलों में रहने के बाद
पति के साथ जंगल की कुटी में आ चुकी थी

पर उसका समय वहीं खड़ा रहा वृक्ष बन
अब भी वह कुमारी थी
और समय वहीं खड़ा था
एक क्लीव पति के रूप में
जो था अक्षम उसे मुक्त करने में
उस बेढंगे नक़ली पाखंडी कौमार्य से
जितना विवश, उतना ही दुखी पति
जितनी बड़ी अक्षमता
उससे भी बड़ी महत्त्वाकांक्षा
पिता बनने की, वंश वृद्धि की
अपना खोया या छीना राज्य
पुनः प्राप्त करने की
धधकती तृष्णा अग्नि में
रात-दिन जलता
कराहता, चिल्लाता, छटपटाता
रोता, बिलखता, दुख सागर में गोते खाता।

नहीं देख पाई कुंती
पति पांडु का दुख
बताया पति को, सौत को
अपने वरदान का रहस्य

परंतु थी वह इस बार सावधान
खोए राज्य की पुनः प्राप्ति का प्रश्न था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक जटिल समस्या थी
केवल पुत्र नहीं
आवश्यक थे विलक्षण गुणों
शौर्य, पराक्रम, बुद्धि, विद्या से सुसज्जित पुत्र
प्रत्येक पुत्र के पीछे खड़ा उसका असली पिता देखभाल करता

अगली समस्या थी संख्या की
कितने पुत्र
ताकि वह कम भी न पड़ें
और आपस में लड़ भी न पड़ें।

चुन-चुनकर उसने अमंत्रित किये, देवता
एक-एककर
स्वयं के लिए और सौत के लिए भी
वन पर्णकुटि में खिले
एक-एक कर पाँच फूल।

समय
झड़ता रहा पत्तों सा
निबाहते रहे सब
अपना कर्तव्य
हो रहे थे बच्चे बड़े।

वापस लौटीं महारानी कुंती
पाँच विलक्षण पुत्रों के साथ
कुछ और प्रकाशमान हुआ हस्तिनापुर।

किसमें था साहस
जब थे खड़े पितामाह बन अभिभावक
कौन पूछता कहाँ से आए
संभोग में असमर्थ पांडु के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसे विलक्षण, गुणी पुत्र।

कब नाचा जंगल में मोर?

ले आईं माताएँ जंगल से बटोर
पाँच अद्‌भुत अनमोल रत्न
बना दिया उन्हें वारिस विशाल साम्राज्य का

होनी ही थी शत्रुता पैदा
पांडवों और कौरवों के बीच
और वह हुई,
बढ़ी दिन दूनी, रात चौगुनी।

पड़े उसके पैर हक़ीक़त की कठोर पथरीली ज़मीन पर
लाख से बने घर की
ज्वालाओं से बच निकलने पर
नहीं लौटी वह वापस हस्तिनापुर
पुत्रों सहित वेश बदल
रही घूमती जाने कहाँ-कहाँ।

कुम्हार की झोपड़ी में चिंतामग्न बैठी रही
भविष्य की कल्पना में निमग्न

जानती थी वह
कि बहू के रूप में आने वाली है द्रुपद की पुत्री
जीतने वाला है अर्जुन स्वयंवर
सोच रही कुंती
एक माँ नहीं,
सोच रही एक महारानी,
खो गया जिसका राजपाट।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब कौन शतरंजी चाल
फिर कौन सी चाल
क्या कहूँ मैं ऐसा जो हो नीति के अनुकूल।

मैं जानती हूँ
द्रोपदी ही हो सकती वह सूत्र
जो एक माला की तरह समेटे रखे पाण्डवों को
होने दो यह भी
सास के चार तो बहू के पाँच।

परंतु होगा यह कितना अभद्र
कितना लज्जाजनक!

जैसा झेला है मैंने जीवन में
उससे कहीं ज़्यादा
हाँ, बहुत ज़्यादा अपमानजनक

कोसेगा इतिहास
धिक्... धिक् कर उठेगा
सारा सभ्य समाज
नारी द्वारा नारी पर अत्याचार

बजाय समझने के पीड़ा किसी स्त्री की
और करने उपचार
स्त्री ही बढ़ाए उसे तो बचेगा क्या उपाय!
जब स्त्री ही नहीं समझेगी पीड़ा स्त्री की
तो समझेगा कौन,
यह पुरुष समाज?
दिखाई जिसने युगों-युगों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्त्री के प्रति निर्दयता, अन्याय
किया सदा उसका निरादर, अपमान।

इतना कुछ देखने–समझने के बाद भी
इतना कुछ भोगने–झेलने के बाद भी
क्यों नहीं देती स्त्री साथ स्त्री का
मिलकर स्त्रियाँ क्यों नहीं करती प्रतिकार
फिर कैसे और क्योंकर सुधरेगा समाज
टूटेंगी, सड़ी–गली परंपराएँ
बनेंगे नए नियम, नए आचार–विचार
समानता और सम्मान होंगे जिनके आधार

फिर भी होता क्यों नहीं मेरे हृदय में साहस का संचार
सबल पग बढ़ा चलता क्यों नहीं नए समाज के निर्माण पथ पर
नई आज़ादी, नए विचारों के पथ पर
प्रणेता बन नई रोशनी के आगमन का

क्या है यह
युगों की संचित हीन–भावना
या बचपन से कानों में पड़ते
अबला नारी, निर्बला नारी जैसे शब्दों के प्रभाव?

कौन–सा भय है यह
रोकता है जो मुझे बार–बार
स्त्री मुक्ति का पर्व मनाने से
अपने खोए पुत्र को पहचानने के बाद भी
उसे अपने अंक में भर लेने से
पुरुष श्रेष्ठता के पाखंड की
धज्जियाँ उड़ा उसे बेनकाब करने से?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या भयभीत हूँ मैं
पुरुष समाज को
एक साथ नाराज करने से?

हाँ, सत्य तो यही है
महत्त्वपूर्ण है कुंती के लिए
सारे समाज का समर्थन
खोये राज्य की पुनः प्राप्ति के लिए?

माँ के लिए पुत्र-प्रेम से बढ़कर क्या है?
पुत्र स्वार्थ को साधने से बढ़कर नहीं है कुछ भी

अभी तो आवश्यक है सत्ता
देनी होगी प्राथमिकता
नीति या अनीति से अलग होकर राजनीति की शतरंजी चालों को
कर्ण को भी तो लाना है पक्ष में अपने

पुत्र युधिष्ठिर की पुकार के उत्तर में
हाय ये क्या निकला मेरे मुख से—
'बराबर बाँट लो आपस में'!

धिक्-धिक् कर जल उठीं दिशाएँ
किसी भी स्त्री को असह्य अपमान
और लज्जा में डुबा देने वाला यह वाक्य
गूँजा सारे भुवन में
गया सारे युगों के आरपार
औरत की गुलामी का एक और खूँटा
ठुक गया मजबूती से नए तर्क और प्रमाण की तरह
सारे समाज की स्त्रियों के हृदय को भेदता
लिखा इतिहास ने तुम्हारा नाम भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वही शाश्वत सास-बहू का खेल खेलने वालों में!

हाय! कुंती और कितना गिरेगी
और क्या-क्या अधम पातक जुड़ेंगे तेरे नाम से?
कौन-सा आदर्श जाएगी छोड़ स्त्री समुदाय के लिए?
अभी तो शेष है निर्णायक महायुद्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुल और गोत्र

दम लिया अभीष्ट को पाकर ही
पाँवों तले दबाकर ही शिखरों को
तब जाकर समाज चकित भरमाया सा
आ खड़ा हुआ मेरी जयकारों से
करता गुँजित आसमान!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसी धुंध
कैसा कोहरा
फैला है जो सदियों से युगों के आर पार
सतयुग से कलियुग तक?

ये कैसे महल
कैसे मंदिर
कैसी अट्टालिकाएँ
कैसे कँगूरे, कैसे शिखर
कैसी-कैसी पताकाओं से सुसज्जित
रोक रखी है जिन्होंने हमारी रोशनी

ये कैसे मुकुट
कैसे तिलकित ललाटों वाले सर
कैसी पगड़ियाँ कैसे मुरेठे
पहुँचने नहीं देते हम तक जो
चाँदनी की चमक उसकी शीतलता

बस एक नीम रोशनी वाला अंधेरा
एक दाग़दार उजाला
घेरे रहता जो हमें सदा!

ये कैसे अदृश्य बंधन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाँधे बैठे हैं हमारे हाथ-पैर
जकड़ रखे हैं हमारे फेफड़े

कैसा है यह खेल
कौन है वह कुशल खिलाड़ी
कर रखा है हमें वंचित
जाने कब से
रखेगा जाने कब तक
हवा पानी और रोशनी के
प्राकृतिक अधिकार तक से!

मानवता के विरुद्ध
रचा किसने यह ऊँच-नीच का
कुल और गोत्र का षड्यंत्र?

कर्मप्रधान जगत में
बना कैसा जन्म निर्णायक
प्रभुता कैसे पाई धन वैभव ने उस समाज में
सारा ढोंग जहाँ नैतिकता
धर्म और न्याय पर है

यह अबूझ पहेली
जाने रची हुई किसकी
भूल-भूलैया यह
निर्मित है क्योंकर
कौन प्रणेता है?
जातियों की अधमता, श्रेष्ठता का
पता नहीं वे कौन से आधार हैं
कौन से हैं तर्क जो कर पाए सिद्ध
कि होती है श्रेष्ठता केवल कुल या जाति की
नहीं श्रेष्ठ कर्म या विचार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुल और गोत्र से हीन-दीन
कितने ही महावीर घिरे हुए
जातियों के
व्यवस्था के दुष्चक्र से।

नहीं मिलती राह कोई
हैं विवश जाने के लिए
गुरु द्रोण या परशुराम के पास
जो विद्या देंगे बाद में पहले देंगे श्राप
वसूलेंगे प्राणान्तक गुरुदक्षिणा
माँग लेंगे अँगूठे का दान

ये कामी, श्रेष्ठ कुल विभूषित
नर पुंगव पुत्र तो देंगे सहास
परंतु ग़लती से भी नहीं आश्रय
अपने कुल-गोत्र का

इंद्रप्रस्थ के महलों में नहीं
घने जंगलों में ही
माँ हिडिम्बा, पुत्र घटोत्कच को
करना होगा निवास

आ धमकेंगे किसी दिन
बिना किसी शर्मो-लिहाज पुत्र-पुत्र पुकारते
होगी जब भी ज़रूरत इन शोषकों को
किसी वीर के शीश की देने के लिए बलि
बचाने को अपना राजपाट।

रक्त की शुद्धता का
गढ़ा किसने यह अवैज्ञानिक सिद्धांत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं क्यों उठा यह प्रश्न कभी
कि कैसे कोई जी सकता है अशुद्ध रक्त लेकर?

क्या है यह षड्यंत्र परजीवी प्रभुवर्ग का
या है बिना संघर्ष समर्पण उसका
जो करता है सर्वस्व निछावर हित में समाज के
जिसकी सेवानिष्ठा, कर्तव्यपरायणता से
चलती है यह दुनिया
बढ़ता है आगे समाज यह।

वही वर्ग क्यों छोटा?
जो अपना स्वेद बहाता है
और श्रेष्ठ वह परजीवी शोषक समूह
जो बिना किए कुछ भी
अपनी मक्कारी छल-छद्म के दम पर पलता-बढ़ता है!

कैसा अधम, नीच वह नर जो
गीत भूतकाल के गाता
पुरखों का नाम बेच अपना मूल्य बढ़ाता!

सच तो यह है कि
विक्रमी पुरुष वही है वही श्रेष्ठ
जो चलता नहीं कुल का, गोत्र का
पूर्वजों का नाम रटते
जो अपना तेज जगाता
कर श्रेष्ठ कार्य सम्मान समाज से पाता है।

मैं कर्ण, कुल गोत्र जाति से हीन दीन
लेकिन हिम्मत से काम लिया
धीरज धर रहा प्रयासरत
प्रगति की राह बनाने को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी नहीं रोना रोया
अपनी जन्मजाति की विपन्नता साधनहीनता का
घोर परिश्रम से अपनी विपत्ति के पत्थर काट
सोपान गढ़ा ऊपर जाने का
सारे समाज पर छाने का

बाधा विघ्नों को गले लगाया
सहा हँसते-हँसते
चिलचिलाती धूप
कड़कड़ाती ठंड
पत्थरों की बौछार प्रतिकूल मौसमों में।

झेले प्रलयंकर झंझावात
अपवादों के
सहे विषाक्त नुकीले व्यंग्य बाण
कुल जाति गोत्र के ठेकेदारों के
पर आह नहीं निकली होंठों से कभी,
मुस्कान ओढ़े, मनोबल बढ़ाए रहा चलता नित्य
दया, दान, न्याय, धर्म की राह पर

दम लिया अभीष्ट को पाकर ही
पाँवों तले दबाकर ही शिखरों को
तब जाकर समाज चकित भरमाया सा
आ खड़ा हुआ मेरी जयकारों से
करता गुँजित आसमान!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखे मैंने उन आँखों से

सत्ता पद-प्रतिष्ठा का भला क्या लोभ होगा मुझे?
श्रेष्ठ-कुल-गोत्र क्या लुभा पाएँगे मुझे
द्रौपदी तो सदा रही मेरी कल्पना में,
प्यार में, नफरत में, क्रोध में, पछतावे में
उसे किसी और रूप में पाने की भला क्या होगी अभिलाषा?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पांडवों के जन्मदाता देवताओं की अपुष्ट कथाएँ या अफ़वाहें सुन
कल्पना मेरी दौड़ती उड़कर आकाश में पहुँचती
सूर्यदेव की चरण वंदना करती बार-बार
होने लगा मुझे कुछ-कुछ आभास-सा।

महारानी कुंती भी निश्चय ही पहचान गई
अपने खोए रतन-धन को
मेरे कुण्डलों को कवच को

जब भी मिली दृष्टि पछतावे के झिलमिलाते आँसू
देखे मैंने उन आँखों में
जाने कैसा वात्सल्य भरा था नज़रों में उस रानी की
कर देता था पुलकित रोम-रोम
जैसे राधा माँ की गोद
पर स्वाद अलग-सा कुछ।

सर्वज्ञाता कृष्ण भी शायद
पहुँच गए थे रहस्य की तह तक
उनकी चपल दृष्टि जब भी पड़ती थी मुझ पर
देती विचित्र आभास
जैसे बिन बोले ही बोल रही हो जानता हूँ मैं तुम्हें चिर सखा तुम मेरे
होंठों पर उनके आई हल्की स्मित
देती उनकी किसी कुटिल योजना का आभास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करती पैदा आशंका अनागत के प्रति

बहुत बाद में पिता सूर्य के मुख से
मैंने जब जानी अपनी जन्मकथा
तो अनमना सोचा करता
वह क्या जो रोक रहा था माँ कुंती को मुझ तक आने से
भर अपने अंक में गोद अपनी सजाने से मुझे अपनाने से?

जाने क्या कुटिल योजना थी पनप रही
अर्जुन-सखा कृष्ण के मन में
कर किसका लिहाज साधा था उन्होंने भी मौन

अक्सर शयन कक्ष के एकांत में
आते रहते थे ऐसे विचार मन में
करते व्यथित
अंदर कहीं चितिंत भी
परंतु कक्ष में ही छोड़ इन्हें
निकलता था जब प्रात: सूर्य नमन को तो
प्रफुल्लित उत्साहित मन में मेरे रहता था विचार
केवल अपने लक्ष्यों का
ऊपर से ऊपर उठते जाने के संकल्पों का

थे त्रस्त विरोधी मेरी क्षमता से
मेरा युद्ध कौशल डराता था उन्हें
मेरी शस्त्र निपुणता के समक्ष
था आभाहीन क्षत्रिय समाज

ललचाने लगे सभी मुझे मित्र बनाने को
कुल-गोत्र, ऊँच-नीच के गीत भुला
हुए विवश मेरा यशोगान गाने को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समानता ही थी आधार मेरी और सुयोधन की मित्रता का
नहीं था मुझ पर कोई बंधन
स्वतंत्र रूप से करता था मैं अपने राज्य का संचालन
समानता पर आधारित अपनी कल्पना का समाज बनाने को

एक कल्याणकारी राज्य के निर्माण हेतु
धीरे-धीरे ही सही
मैं बढ़ाता जा रहा था पग अपने ध्येय की ओर

बना मैं श्रेष्ठ
कवच-कुंडल सुशोभित तेजोदीप्त
स्थूल-कंध, दीर्घ बाहु, सौंदर्य युक्त, अंग-सौष्ठव
सद्य उदित सूर्य-सा उज्ज्वल, प्रदीप्त ललाट बुद्धि वैभव-से चमकते नेत्र
काम्य आर्यावर्त की श्रेष्ठतम नारियों के लिए भी

पांचाल नरेश पुत्री याज्ञसेनी की सुनी प्रशंसा एक दिन
उपस्थित हुआ भरे दरबार में एक ब्राह्मण उसका चित्र लिये
उस मनमोहक चित्र के बदले
पुरस्कार भरपूर पाने पर भी टला नहीं वह
जब तक उसे उसका मनचाहा नहीं मिला
अर्थात मेरा भी वैसा ही
यत्न से बनाया मनमोहक चित्र
पता चला पर बाद में कि यह विचित्र संजोग
नियोजित था पांचाल नरेश के इंगित पर।

रोचक थी इस नाटक की पृष्ठभूमि
द्रुपद बेचैन थे
बदला लेने हेतु अपने अपमान का द्रोण से
जो था असंभव बिना सहयोग
पार्थ अथवा कर्ण के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पांडवों से तो उन्हें थी नहीं आशा कोई
अब बचा मैं
देते समय शिक्षा जिसे
द्रोण का दुर्भावनापूर्ण व्यवहार था ज्ञात सबको
और वही आधार था मेरे प्रति इस सदाशयता का
यदि जामाता बना मैं उनका
तो थी सरल प्राप्ति प्रतिशोध के लक्ष्य की

मेरे मन में भी जाग उठा था
अनुराग प्रबल पांचाली के प्रति
आर्यावर्त के श्रेष्ठतम पुरुष का मिलन
सर्वगुण संपन्न श्रेष्ठतम नारी से
यूँ भी स्वाभाविक था
परंतु काम्य था मेरे लिए भी विशेष
क्योंकि विवाह यह देता चरमसिद्धि
कुल-गोत्र, जाति आदि के विरुद्ध
छेड़े गए मेरे अभियान को

हुआ प्रतीक्षा का अंत
किया गया घोषित स्वयंवर द्रौपदी का
परंतु थी शर्त अति कठिन शर संधान की
निर्धारित हुआ शायद ध्यान में रख
मेरी धुनर्विद्या की कुशलता को

था वह लक्ष्य संधान
संभव मात्र दो के लिए ही
या तो पार्थ या फिर कर्ण

पांडवों का कुछ अता-पता न था
अवसर होता था प्रतीत अनुकूल
कौरव भ्राताओं के साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाग लेने स्वयंवर में हुआ मैं प्रस्तुत
पांचाली के प्रति अनुराग विजय के लिए आश्वस्त
और आत्म विश्वास से भरे हृदय के साथ

परंतु इस बीच होनी खेल चुकी थी अपना खेल
पहुँच चुका था मुझसे भी पहले पांचाल दुर्भाग्य मेरा
फूँक चुके थे कृष्ण कानों में धृष्टद्युम्न के अपना मंत्र
मेरे लक्ष्य भेद हेतु उपस्थित होते ही
आँखों ही आँखों में हुए कुटिल इशारे
कृष्ण-कृष्णा और धृष्टद्युम्न के बीच
खड़े हो उच्च स्वर में की घोषणा
राजकुमार धृष्टद्युम्न ने—
स्वयंवर की यह प्रतियोगिता
है केवल
उच्च कुल-संभूत वीरों के लिए ही।

मेरे पैर थे जहाँ
जम गए वहीं
किसी प्रस्तर मूर्ति के समान
अपमान की ज्वाला से तप्त हो उठा शरीर
यूँ तो कोई नया नहीं था ऐसा अपमान
था मैं अभ्यस्त इसका अपने बालपन से,
परंतु परोक्ष रूप से देकर बढ़ावा
स्वयं ही इस परिवार ने था मुझे उकसाया
चित्र दिखा ललचाया था
पहली बार इस शुष्क हृदय में जली थी स्नेह ज्योति प्रेम की
और उसका ऐसा दारुण अंत!

दुर्भाग्य ने तो मुझे छला था बारम्बार
जन्म लेते ही हो गया था सवार मुझ पर
और बना रहा साथ मेरे जीवन पर्यंत।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी परशुराम का तो कभी किसी का रूप धर
परंतु जिसके प्यार में मैं हो गया था दीवाना
और यह प्यार था भी नहीं इकतरफ़ा
फिर भी द्रौपदी का ऐसा आचरण इतना गहरा घाव दे गया
जो पूरी तरह भरा नहीं जीवन भर
टीस उठता था जब भी आता कोई प्रसंग पांचाली का।

पछतावा ही पछतावा
क्षणिक आवेश में हो जाए कुछ अविचारित
जघन्य अपराध कोई
तो होता है असंभव
धनुष से निकले तीर सा उसे वापस लाना।

कोई प्रायश्चित, कोई पछतावा मिटा नहीं पाता वह ग्लानि
वह अपराधबोध जो शूल सा छेदता है मन
देता ही रहता असह्य यंत्रणा
आती है जब भी उसकी याद
समय-कुसमय, ठौर-कुठौर

द्रोपदी स्वयंवर के प्रसंग-सा ही
मुक्त नहीं हो पाया मैं कभी भी
द्रोपदी के चीर-हरण प्रसंग से
एक दु:स्वप्न-सा रहता वह
सालता मेरे हृदय को सदा सर्वदा

यूँ तो कोई भी प्रायश्चित
नहीं था समर्थ मेरे पाप को मेटने में
फिर भी पाण्डवों के वनवासकाल में
अपनी द्रौपदी के भूमिशयन की कल्पना मात्र
करती थी इतना बेचैन
कि सो नहीं पाया मैं कभी अपनी शैय्या पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नींद आती थी केवल तभी
जब बाँहों का सिरहाना बना लेटता था फर्श पर
याद करके उसे

कितना विचित्र था
अपनी अनुपस्थिति में
मैं जैसे रहा विद्यमान इंद्रप्रस्थ में
कुंती के मन में ऊहापोह बन
द्रौपदी के मन में प्रेम-घृणा का द्वंद्व बन
पाण्डवों के मन में भय बन
और कृष्ण के मन में बन प्रश्नचिह्न

वैसे ही याज्ञसेनी भी सदा रही
उपस्थित सदा हस्तिनापुर में अपनी अनुपस्थिति में
सुयोधन के मन में एक काँटा बन
मेरे मन में एक मीठी कसक, एक आह बन
भीष्म आदि गुरुजनों के मन में पछतावा बन

तेज़ी से घूम रहा था कालचक्र
और उससे भी तेज़ी से घटती घटनाएँ
लौट आए थे पाण्डव वापस
पूरी कर जुए की सारी शर्तें
माँग रहे वापस अपना इंद्रप्रस्थ।

बँट रहा सारा जम्बू द्वीप पक्ष-विपक्ष में
दावाग्नि की तरह फैल रही थी नफ़रत की आग
याद आ रही थी नरेशों को पुश्तैनी दुश्मनियाँ
किए गए मान-अपमान भूली हुईं प्रतिज्ञाएँ
सब कुछ लील जाने को आतुर करालकाल
अपना मुँह खोल खींचे जा रहा था सबको अपनी ओर
स्वाहा...स्वाहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंतिम परीक्षा की
निर्णायक घड़ी आने को थी
कुछ तो पिता सूर्य का इंगित
और कुछ अपने मन का पूर्वाभास।

मैं जानता था
युद्ध रोकने के अंतिम प्रयास में
आएँगे एक दिन कृष्ण
विचलित करने मेरे जन्म की कथा सुना
मुझे निमंत्रित करने
सबसे बड़ा पाण्डव भ्राता बनने को
राजपाट और द्रौपदी का लोभ दिखा।

परंतु मैं निश्चिंत था
सुयोधन को छोड़ने का कोई प्रश्न ही नहीं था,
सत्ता पद-प्रतिष्ठा का भला क्या लोभ होगा मुझे?
श्रेष्ठ-कुल-गोत्र क्या लुभा पाएँगे मुझे
द्रौपदी तो सदा रही मेरी कल्पना में,
प्यार में, नफरत में, क्रोध में, पछतावे में
उसे किसी और रूप में पाने की भला क्या होगी अभिलाषा?

जानेगा कौन बेहतर
कितना खोखला कितना अमानुषिक
जाति कुल गोत्र की श्रेष्ठता का सिद्धांत

रहा प्रयासरत अपना जीवन एक
अनुकरणीय उदाहरण बना
प्रेरित करने
सारे दुखी, दमित, जनों को
हीन भावना उनकी कर दूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भरने को उनमें स्वाभिमान
अलख जगाता रहा भर जीवन
सड़े गले रीति-रिवाजों के विरुद्ध
ढोंगी, पाखंडी गुरुओं के विरुद्ध
अन्यायी परंपराओं के विरुद्ध
पक्षपाती अमानवीय सोच के विरुद्ध।

राजपाट के बदले कैसे मैं
खड़ा हो सकूँगा इनके विरुद्ध
कौन दे सकता है अपने सारे जीवन की कमाई
कौड़ियों के बदले
असंभव अपना सारा जीवन नष्ट करने जैसा
जैसे ही मानूँगा, करूँगा स्वीकार
निमंत्रण केशव का
सारे कुल-गोत्र अभिमानी
सारे पाखंडी ढोंगी
समाज के सारे कलंक
पंडे और पुरोहित मिल
एक स्वर में चिल्लाएँगे—

कुल गोत्रहीन यह कर्ण
सदा रहा नीच का नीच
राजपाट मिलते ही बदल गया

पार्थ से युद्ध के
भय से भयभीत
अवसर मिलते ही भाग चला
निज प्राणों का यह लोभी
कितना पापी निकला!

मैं ऐसा कैसे होने दूँगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिस पंक कीच से खींच
ला रहा दमित दलित समाज को बाहर
कैसे उसे पुनः उसमें धँसने दूँगा?

फिर भी आई यदि माँ कुंती
आँचल में स्नेह, आँखों में वात्सल्य के आँसू भरे तब क्या होगा?
नहीं लौटाया जिस कर्ण ने
कभी किसी याचक को निराश
कैसे लौटने देगा अपनी माँ को ख़ाली हाथ

परंतु कर्ण करेगा क्या
क्या है उसके पास
वह माँ के ख़ाली हाथ भरेगा
हाँ, दे सकता हूँ मैं
आशंकित, भयभीत पृथा को
ऐसा एक वचन जो
शायद कर सके उसे आश्वस्त

एक प्रतिज्ञा जो मैं निभाऊँगा
उस प्राणांतक, निर्णायक युद्ध के दौरान
पार्थ को छोड़ नहीं लूँगा मैं प्राण
किसी और पाण्डव भ्राता के।

यदि नहीं भरा माँ का मन
तो दूँगा उसे वचन यह भी
कि नहीं चली इस रण में
और हुआ हत पार्थ मेरे हाथों
तो नहीं मनाऊँगा मैं कोई विजयोत्सव
कौरवों के संग
वरन् छोड़ उन्हें चल दूँगा त्याग सब राजपाट
माँ कुंती के आँचल की छाँव खोजता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पराजित भ्राताओं को देता दान अभय का।

हाँ, तब जाऊँगा उनके पास
जब उनकी रात अँधेरी होगी
जितना संभव हो फैलाऊँगा
जीवन में उनके उजियाला।

हाँ-हाँ, यही आचरण होगा
कर्ण के जीवनदर्शन के अनुरूप
शायद समझा सकूँगा मैं इस पगले समाज को

मेरा यह त्याग
कुछ सही मार्ग दिखला पाएगा इस अँधे समाज को
कर पाए शायद प्रेरित श्रीमंतों को
देखने लगें वे समता, सम्मान की नज़रों से
उन भाग्यहीन, दीनों, दुखीजनों को
जो साथ-साथ उनके उसी समाज में जीते हैं
पर प्रकाश के क़तरे-क़तरे को
थोड़े संसाधन
थोड़ा सम्मान
प्राप्त करने को
सारा जीवन तरसते और तड़पते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रत्येक स्त्री का इंद्रप्रस्थ

धिक्कार है उस धर्म को
जिसकी बलि वेदी पर कर दी गई थी मैं कुरबान
और वह भी दुहाई देकर उस धर्म की रक्षा की
बिखरता है जो तार-तार
छिड़ता है महायुद्ध कोई भी
टकराते हैं सम्राटों के स्वार्थ जब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रीति, प्रेम, प्रणय, रुचि, स्नेह, प्रियतम
आदर्श का, अटूट चाहत का अपमान

मजबूरी ने मुझसे क्या क्या न कराया

विवाह ने
जिसके प्रति मेरा स्नेह था
उसी को बनाया माध्यम
मुझ पर होने वाले जुल्म, अत्याचार का।

मुख्य कारण
मेरे कष्ट और पीड़ा का

मैं करती तो क्या करती
कैसे माँ कुंती की आज्ञा ठुकराती

उनके सभी पुत्रों में से
एक ने भी नहीं कहा कि यह ग़लत है
मुझे दुख पहुँचाने में उन्हें सुख कैसे मिला
क्लेश, कसक, संताप, दुख, दर्द, पीड़ा
एक औरत के जीवन के लिए
क्या काफ़ी नहीं सज़ा
मुझे तो दाँव पर लगाया मेरे पतियों ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक वस्तु की तरह
ऐसा शर्मसार कर देने वाला कारनामा
वह भी अपने पति द्वारा
मैं खड़ी पत्थर हो गई
परंतु रोक न पाई,
माँ कुंती ने भी नहीं रोका उन्हें
हाथ पकड़ घसीटते हुए लाई गई मैं जब
भरी सभा में जहाँ बैठे थे पिता तुल्य श्वसुर
सब देखते रहे, मेरी दुर्दशा
मैं चीख़ी-चिल्लाई
परंतु सब हो गए थे बहरे
धरती के श्रेष्ठ वीर कायर बने
देखते रहे अपनी पत्नी को भरी सभा में निर्वस्त्र होते
मेरी साड़ी खींच रहा था दुष्ट दु:शासन!

सबसे हो निराश
शरणागत हुई मैं अपने सखा कृष्ण की
वो जहाँ भी थे जान गए मेरा संकट
और उबार लिया मुझे

वह दुष्ट दु:शासन खींचता जाता
और बढ़ती जाती मेरी साड़ी
सभा में उपस्थित सब समझ गए
लीला मेरे सखा कृष्ण की।

मेरी लज्जा तो बच गई
परंतु मैं फिर नहीं रही कल्याणी कृष्णा।

बस एक लपट थी आग की
जलती हुई लौ थी प्रतिहिंसा की
अपनी क्रोधाग्नि में सबको स्वाहा करने की प्रबल आकांक्षा लिये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने अपने पाँचों पतियों को देखा
महान योद्धा माने जाने वाले मेरे पति
किसी कायर, नपुंसक की तरह सर झुकाए बैठे थे।
तब मुझे यक़ीन हुआ कि यह पुरुष प्रधान समाज था
जो पार्वती, लक्ष्मी, काली के रूप में
स्त्री-शक्ति की पूजा तो कर सकता था
परंतु एक स्त्री की दुर्दशा के विरुद्ध साध लेता था मौन
अग्नि को साक्षी रख
मेरे कुशल-क्षेम की रक्षा करने का वचन देने वाले भी
साध गए मौन

धिक्कार है ऐसे स्त्री-विरोधी समाज को
धिक्कार है ऐसे पुरुषों को
धिक्कार है दोगलेपन से भरे ऐसे शास्त्रों को
धिक्कार है ऐसे न्याय को
जो है एकतरफ़ा

धिक्कार है उस धर्म को
जिसकी बलि वेदी पर कर दी गई थी मैं कुरबान
और वह भी दुहाई देकर उस धर्म की रक्षा की
बिखरता है जो तार-तार
छिड़ता है महायुद्ध कोई भी
टकराते हैं सम्राटों के स्वार्थ जब

कहा था सभी ने एक स्वर में
मेरा जन्म ही यज्ञ की अग्नि से हुआ था
धर्म की रक्षा के लिए
जाने कौन-सा धर्म?
जब बांधा गया मुझे देते हुए दुहाई
जाने किन-किन बातों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाने किन-किन कुतर्कों की
पाँच-पाँच पुरुषों के साथ विवाह बंधन में
जो था न देखा, न सुना

पाँच-पाँच पतियों के प्रति पूर्ण पतिव्रता भाव से
पत्नी धर्म निभाने का वह असंभव लक्ष्य
क्या नहीं था जानबूझकर किया गया अपमान, समस्त स्त्री गरिमा का
औरत को पाँवदान समझ
इस्तेमाल करते रहने की परंपरा का अनुमोदन
समाज के श्रेष्ठ, मान्य, अग्रगण्य और पूज्यनीय
यमराज, वायु, इंद्र और अश्विनी कुमारों जैसे देवताओं के
अंशावतार बन अवतरित हुए
इस धरती पर सबकी रक्षा हेतु
वही शामिल हुए मेरे विनाश में
नारी जाति के विरुद्ध इस षड्यंत्र में
किससे कहती सखा कृष्ण भी तो हो गए थे शामिल
उन्हीं के साथ
जाग उठा था उनका पितृसत्तात्मक पुरुष
लगे देने कुतर्क पांडवों की एकता के टूटने का
जैसे याज्ञसेनी ही थी
उन्हें माला की तरह पिरोए रखने वाला सूत्र
स्त्री होकर भी माँ कुंती ने नहीं समझी मेरी लज्जा मेरी व्यथा।
समझाती कैसे उन्हें
था कितना अंतर उनके
पाँच और मेरे पाँच में

मन ही मन जानते थे सभी
इस अन्याय के विरुद्ध
मेरे हृदय में उठे प्रतिरोध को
परंतु बने रहे सभी अनजान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह था कुरुक्षेत्र के महाभारत से पहले ही
रचा गया स्त्री की गरिमा, लज्जा, सम्मान और समानता
को नष्ट करने का महायज्ञ,
अनंत काल से अनंत काल तक
रहेगी स्त्री की यही व्यथा
पूछती है स्त्री पुरुषों से,
क्या यही महाभारत है?
मेरी लज्जा, मेरे सम्मान के विरुद्ध
रचा गया युद्ध महाभारत है?

जन्म जन्मांतर तक स्त्री की ही परीक्षा
उसके सगे संबंधों से नहीं कोई अपेक्षा
सुनिए, संयम से मेरी कथा
पढ़िए महाकाव्य महाभारत
सदा-सदा से शापित स्त्रियों की कथा
माँ कुंती की कथा, माँ गांधारी की व्यथा
कितनी अकेली हूँ मैं!
अकेली ही होती
अबला से सबला बनती स्त्री।

लो कौरवों, हो गई पूरी तुम्हारी इच्छा
निकल गया आगे हस्तिनापुर इंद्रप्रस्थ से

या शायद है यह इंद्रप्रस्थ ही
जो कभी फैला रहता मेरे बाहर
कभी सिमट आता मेरे भीतर
चलता ही रहता सदा मेरे साथ
हर स्त्री के साथ,
जाएगा यह अवश्य मुझसे भी आगे
नष्ट नहीं होता इंद्रप्रस्थ,
न व्यक्तियों के साथ न समय के साथ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रार्थनालयों और प्रासादों के
स्वर्णिम शिखरों के पीछे
जहाँ भी होती है बस्ती हीनजनों की
अथवा रानियों, महारानियों के क्लेशों की
गृहणियों और पत्नियों के आँसुओं की
दीन-दुखियों की आहों-कराहों
की त्रिवेणी पर
अवतरित होता है इंद्रप्रस्थ
अभिशप्त नित नष्ट होने के लिए
पाए वरदान बार-बार जीवित होते रहने का।

मैं न कर सकी स्वर्गारोहण सदेह
रुक गई यहीं इसी धरती पर

हिमालय की स्वर्ण-रेणु पर
फिसला मेरा पाँव सबसे पहले
और मैं गलती गई
मिलती गई उसी रेणु में
और फिर रेणु की ही तरह
फैलती गई समूची सृष्टि में
फैलती गई मेरे साथ मेरी यातना, लांछना
मेरा द्वंद्व, मेरा संघर्ष
अन्याय के विरुद्ध मेरा प्रतिरोध
विश्व की प्रत्येक स्त्री में

चलता रहा मेरा इंद्रप्रस्थ भी साथ-साथ
होता रहा नष्ट बार-बार
होता रहा पैदा बार-बार
प्रत्येक स्त्री के साथ उसका इंद्रप्रस्थ।

●●●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

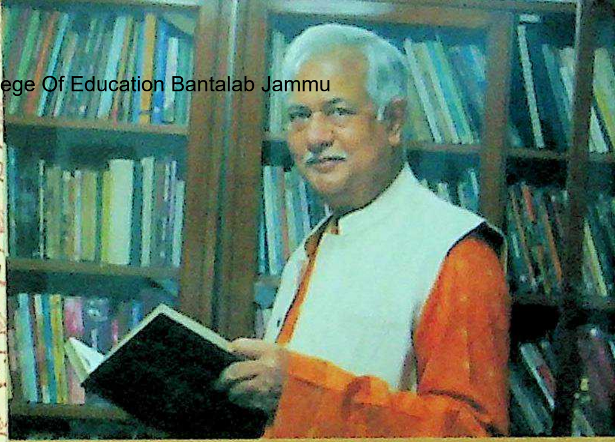

उपेन्द्र कुमार

जन्म : सितंबर 1947, बक्सर, बिहार

पिता : स्व. जगदीश कुमार, स्वतंत्रता सेनानी

माता : स्व. नगीना देवी, स्वतंत्रता सेनानी

शिक्षा : स्नातक इंजीनियरिंग, स्नातक विधि

देश-विदेश की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा कविताओं का प्रसारण एवं ग़ज़लों की प्रतिष्ठित गायकों द्वारा संगीतमय प्रस्तुति। बी.बी.सी. द्वारा कविताओं का प्रसारण। देश-विदेश में आयोजित विभिन्न काव्य-गोष्ठियों में कविता पाठ।

प्रकाशन : 'बूढ़ी जड़ों का नवजात जंगल', 'मैं बोल पड़ना चाहता हूँ', 'चुप नहीं है समय', 'प्रतीक्षा में पहाड़', 'गांधारी पूछती है', 'उदास पानी', 'प्रेम प्रसंग', 'गहन है यह अंधकारा', 'नंगे पाँव... चाँदनी' आदि कविता-संग्रह तथा 'अपना घर नहीं आया' और 'ख़ुशबू उधार ले आए' ग़ज़ल-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

सम्मान : साहित्यिक कृति सम्मान तथा साहित्यकार सम्मान : हिंदी अकादेमी, दिल्ली, काव्य रचना सम्मान : महर्षि गंधर्व वेद विश्व विद्यापीठ सहित कई अन्य सम्मान एवं पुरस्कार।

सम्प्रति : प्रशासनिक सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद लेखन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय।

संपर्क : एफ-73, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065

ई-मेल : upendrakr1947@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह है इंद्रप्रस्थ का चरित्र। वहाँ का वातावरण। इसमें नारी पुरुष के रिश्ते ही नहीं, उनके जीवन के ऊँचे-नीचे, बाँके-टेढ़े मोड़ों की कथा भी है। इस काव्य में 'एक था राजा एक थी रानी' वाली सीधी कथा नहीं और न ही प्रसाद (कामायनी) वाली जटिल महाकाव्यात्मक संकेत परक नई परंपरा। फिर भी इक्कीसवीं सदी के जीवन की छाया इन छंदों के पग-पग में लिपटी मिल जाती है।

उपेन्द्र कुमार के काव्य में संभावनाएँ झाँक रही हैं। इसमें भारतीय जीवन मूल्य जगह-जगह लहरा रहा है। इन्हीं में काव्य की सारी संभावनाएँ जीवन्यास पा जाती हैं।
अत: उन्हें जगन्नाथ का आशीष मिलेगा, इस विश्वास के साथ।

—शंकरलाल पुरोहित

उपेन्द्र का जादू युगों के भूल भूलैयों से अर्थ ढूँढ़ता हुआ, अनर्थ के बीच से क्लासिकी को अत्यंत सरल बनाकर हमारे सामने रखता है। इसे जो भी पढ़ेगा, चकित रह जाएगा।

उपेन्द्र एक नई नज़र से क्लासिकी को रिइंटरप्रेट (Reinterpret) और रिवैल्यूऐट (Revaluate) कर रहे हैं। ऐसा करना इस सदी के लिए ज़रूरी भी है और महत्त्वपूर्ण भी।

हर युग में क्लासिकी को 'दिल में छुपे सत्य' जैसा, उस जमाने की नज़र से रिक्रिएट (Recreate) करना होता है। यही काम इस कद्दावर शायर ने हमें अता करके साहित्य में अपनी नई पहचान बनाई है। इसे समझदार और रसिक पाठक चाहें भी तो भुला नहीं पाएँगे।

मुझे इस महाकाव्य पर दो शब्द लिखते हुए बेइंतहा गर्व हो रहा है और मैं क़ुली क़ुतुबशाह की दक्किनी में लिखी लाइनें पेश कर रही हूँ—

'मेरा शहर तू लोगाँ सूँ मामूर कर
राखियाँ ज्यूँ त्यूँ तू दरिया में मीन या समी'

ये दुआ क़ुली की थी उसके शहर पर, मैं उसको ज़रा बढ़ाकर वही दुआ अब देहली के लिए माँगती हूँ जो शायद कभी इंद्रप्रस्थ था।

—राजकुमारी इंदिरा देवी धनराजगिरि

मूल्य : ₹ 310/-

अंतिका प्रकाशन
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
गाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

ISBN 978-93-85013-49-2

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant